Chapter-3

तीसरा अध्याय - कहानी संग्रह के प्रकाशन काल
तथा उसकी कथावस्तु

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का विकास

स्वातंत्र्योत्तर काल में देश में जनतंत्र स्थापित हुआ । जनतंत्र ने हमारे जीवन को प्रभावित किया । व्यक्ति स्वयं की स्वतंत्रता का ख्याल रखते हुए समाज में समुचित व्यवहार करता और जिस आचरण, विचार, चिंतन का संतुलित रूप प्रदर्शित करता वह साहित्य के लिये महत्वपूर्ण और नयी "वस्तु" बनती विकास की. यह दिशा नये जीवन की सफलता-विफलता को साहित्य कहां तक अपनी वस्तु बना सका । स्वतंत्रता के बाद भिन्न परिस्थितियाँ आयी । जिनका असर समाजिक, राजनैतिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में पड़ा । शहरों से भी गांवो में इसका दुष्परिणाम रहा ।[1]

गांव से जो शहर आये उन्हें भिन्न परिस्थितियों का सामना करना पड़ा । उदरपूर्ति के लिये श्रम अपर्याप्त रहा । उनकी मजबुरी का गलत लाभ उठाकर मन और तन से खिलवाड़ होने लगा । शहरी समाज अपनी उलझनों में खप गया । मजदूरों को पेट भरने की चिंता होने लगी । मध्यम वर्ग संकीर्ण और संकुचित बन गया । उन पर स्वार्थ दावी हो गया । चाटुकारिता की वृत्ति का अधिक प्रचलन रहा । उच्चवर्ग विलासमय आवश्यकताओं की पूर्ति में बज्यंत्रों में लीन हो गया । एक वर्ग नित्त बढ़ती मंहगाई से परेशान था । तो दूसरा अपनी असभ्य वासनाओं की मार से । सहानुभुति, समाजहित, शिष्टत्व जैसी भावनाएं पुस्तकों की बातें बनकर रह गयी । अपने जीवनापापन के लिये और बढ़ती आकांक्षाओं की पूर्ति के लिये चोर बाजारी, कर चोरी, भ्रष्टाचार, एक दूसरे के साथ छल तथा कानुन विरोधी कार्य प्रारम्भ हुए । काम बना जाने की हीन व्यवसायिक वृत्ति उत्पन्न हुई । राजनीतिक हथकंडों ने लालच लिप्सा के साथ विरोधात्मक एंव विद्रोहत्मक प्रतिकियाएं भी उत्पन्न की । धर्म जीवन जीने की मान्यताओं से भिन्न बनकर आडम्बर अधिक बन गया ।

साहित्य भी इन मानसिक स्थितियों से प्रभावित हुआ । कहानी वस्तु को इन समाजिक, आर्थिक, नैतिक, मान्यताओं और धाराणाओं की उखड़न और रीतेपन के सर्वाधिक प्रभावित किया । ऐसे जीवन का साहित्य भी अपनी प्रगति अन्य विधाओं की आवश्यक विशेषताओं के स्वीकार और परित्याग को लेकर चलता है ।

स्वाधीनता से पूर्व के कथा लेखक, विशेषकर अज्ञेय, जैनेन्द्र, जोशी और यशपाल भी जीवन के विविध अर्थों, अभिप्रायों, स्थितियों और घटनाओं के लेखक है। इनकी कथाओं में भाव और रुप के समीकरण का आधार यथार्थ की स्वीकृति के होते हुए भी एक रोमानी बारीकीपन है। कोई भी लेखक को किसी न किसी प्रकार के नाजुक खयालों से बंधा होना चाहिये। फिर चाहे वह भावनात्मक हो, विचारधात्मक हो, या प्रयोगात्मक के आधार पर हो। यह कलाकर कहानी में अतिशय न महीन काम करने का आग्रह करते है। जबकि इन लेखकों के सामुख प्रेमचन्द्र की सहज कहानी का आधार स्पष्ट था। तब भी ये लोग अपने किले अपने ढंग से गढ़ रहे थे। व्यापक जिंदगी में व्यापत सच्चाई को वे पकड़ नहीं पा रहे थे। सन् 1948-50 का समय भारतीय इतिहास का वह समय था। जब भारतीय के मूल चरित्र से जुड़ें हुए उपकरण मानवीयता, सदाशयता सत्य और अहिंसा आदि प्रश्न अंकित हो उठे। जिंदगी पर अनेक अमानुष दबाव पड़ रहे थे। जो लोग जी रहे थे उनका संकट भी एक ही प्रकार का था, देश के बंटवारे के बाद त्रासदी के साथ-साथ प्रस्फरित पूंजीवादी व्यवस्था ने प्रत्येक वस्तु, व्यक्ति और नियमों का बाजार भाव् निश्चत कर दिया था। नये सिद्धांतो, सुख सुविधाएं नये शहरो के साथ और पुराने सिद्धन्त पुराने गांवों के साथ अपने संकट में थे। सभी लोगों में जीने की, जीतने की, हारने की व लड़ने की नियति थी।[3]

रामदरश मिश्र का कथा लेखन "नयी कहानी" के प्रारम्भ पर्व के समान्तर ही शुरू होता है। "नयी कहानी" ने कहानी के इतिहास में एक अलग प्रकार का संवेदात्मक, संरचनात्मक स्वरूप बनाया और सर्वथा नये प्रतिमानों के पक्ष में अनेक विचार दिये। इन कथाकारों ने यथार्थ के आधार पर अनुभूतियों को प्रमाणिक मानते थे। यह वह समय था जब जीवन का बाहय अस्तित्व बहुत मूर्त हो गया था। और उसके परिवेश का चरित्र अनेक राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक कारणों से लगातार बदल रहा था। इसके साथ-साथ जीवन की बढ़ती हुई समस्याएं साहित्य के लिये एक बहुत बड़ी चुनौती थी। अतः सफल साहित्यकार के लिये यह आवश्यक था। कि वह अपने युग की चिन्ता, संघर्ष, और संकट को

समझ कर उसको सुलझाने का निर्णय ले । कभी केवल अनुभव के आधार पर न होकर यथार्थ पर भी बहुत निर्भर करती है ।

कहानी का सम्बन्ध उस युग के जीवन से होता है । स्वतंत्रता के बाद ही जीवन में संघर्ष और समस्याएं पैदा होने लगी । "चारा काटने की मशीन" (उपेन्द्र नाथ अश्क), "लेटर बोक्स" (अज्ञेय), "अगम अथाह" (विष्णु प्रभाकर), "तांगे वाला" (विष्णु प्रभाकर), "एक और हिन्दुस्तानी का जन्म हुआ" (चन्द्रगुप्त, विद्यालंकार) इस संदर्भ की अन्य कहानियां जो विभाजन के समय के दंगे और उसके बाद का लेखा जोखा प्रस्तुत करती है । स्वतंत्रता पश्चात के हिन्दी कहानी में धर्म भेद, समाजिक-असाहिष्णुता के कारण विष्णु प्रभाकर की "अधूरी कहानी" में मिलती है । 3

कहानी गत समकालीनता का सिलसिला आधुनिकता बोध का विकास मान सिलसिला है । जिसे सन् 50 के आज तक के तीन कथा दौरों के रूप में ग्रहण कर सकते है । पहली दौर सन् 1950-60 के बीच का यानि नयी कहानियों का माना जा सकता है । इसे छठे दशक की कहानी कहकर भी पुकारा जा सकता है ।

दूसरा दौर सन् 1960-70 के बीच की कहानियों का है । जिसे साठोत्तरी कहानी कहकर भी पुकारा जाता है । जिसमें कई कथा आंदोलन उठते रहे है । इसे सातवें दशक की कहानी भी कह सकते है । तीसरा दौरा 1970-80 के बीच की कहानियों का है । जिसे आठवे दशक की कहानी कह सकते है । 4

यहां समकालीन स्थितियां और समस्याओं को एक निजी अंतरंग दृष्टिकोण से देखा गया । निजी और व्यक्तिगत अनुभव की प्रमाणिकता और भोगे हुए यथार्थ के दबदबे के कारण इन कहानीकारों की यथार्थ चेतना का स्वरूप वस्तुगत न होकर आत्म गत है । जितना उनके आत्म वृत्त में लीन रहता है उतना ही वे यथार्त को ग्रहण करते है ।

हांलाकि रामदरश मिश्र ने "50" के आसपास लिखना शुरू कर दिया था । मिश्र जी की पहली कहानी "संध्या" "आज" में 1950 के आसपास छपी थी । फिर "समाज" में "प्रायश्चित" कहानी छपी । फिर भी सही रूप से उनका कहानी आधुनिकता के संदर्भ में हिन्दी कहानी से सन् लेकिन 60 के बाद शुरू होता है । उनकी प्रारम्भिक कहानियां प्रेमचन्द की परम्परा से जुड़ने वाली ग्रामीण परिवेश की ही

कहानियां थी । जो शिवप्रसाद, सिंह, रेणु, मार्कण्डेय आदि के जीवन्त संसार के मेल में थी ।

"नयी कहानी" सामुहिक रूप में अनुभुति के स्तर पर इसी बदले हुए समाजिक जीवन की पहचान की कहानी है । नयी कहानी के लेखको ने अपने-अपने दायरे में जिये हुए जीवन सत्यों के यथार्थ को उभारा है । ये कहानियां अपनी सीमा में भी असीम हो उठती है । और संरचनात्मक में विशिष्ट । जीने की जो शुरूआत "पूस की रात" और "कफन" से शुरू हुई थी । "पत्नी", "जाह्नवी", (जैनेन्द्र), "रोज" (अज्ञेय) और "डाची" (अश्क) से होती हुई नयी कहानी में विकसित हुई । 5

छठें दशक की कहानियों में नगरो-महानगरों की भीतरी बाहरी जटिलताओ से घिरे हुए आम आदमी को पहचानने की कोशिश है । कहानी तब लिखी या कही जाती है । जब रचनात्मक रूप में कहने या लिखने के लिये कुछ हो, जब वस्तुओं को समग्रता में जानने समझने की अन्तर्दृष्टि हो । इस दृष्टि से -नयी कहानी" के लेखको के सामने की स्थितियों के मूल में अजनबीपन, परायापन, संत्रास, सम्बन्ध-हीनता जैसी तमाम अमानवीय परिस्थितियां थी । प्राय निम्न मध्यवर्गीय जिंदगी जीने वाला आदमी आत्मीयता चाहने वाला नहीं, अपेक्षाकृत बौद्धिक, आत्म सजग भावुक, अवसरवादी, सरकारी मशीनरी में कहीं न कहीं फिर अपनी महत्वकांक्षाओं के कारण संकटग्रस्त व्यक्ति था । दरअसल "अनुभूति की प्रामणिकता" के नाम पर ये कहानियां प्राय: "कोरी सच्चाइयों" का कलम बंद बयान बनकर रह गयी थी । व्यापक जीवनानुभवों के प्रति वस्तुनिष्ठ स्वस्थदृष्टि न होने के कारण ये कहानीकार अपनी निजता को दोहरा रहे थे । क्योंकि उनको जिंदगी से जुझने के लिये "जीवन रस" नहीं मिल रहा था । यह "जीवन रस" जमीन से जुड़ाव होता है । रामदरश मिश्र के कथाकार में जीवनरस का वह सिंचाव है । जो उनको लगातार समाज के यथार्थ स्वरूप को प्रकट करने के लिये प्रेरित करता है । मिश्र जी की रचनादृष्टि का विकास एक विशेष सकारात्मक जीवन दृष्टि से होता है ।

इस युग में नगर-महानगर की कहानियों को ही आधुनिक कहानियां कहा जाता था । और ग्राम्य बोध की जो आधुनिक, मानवीय और सार्थक कहानियां होते हुए भी उसे आंचलिक कहानियों की संज्ञा दी जाती थी । रामदरश मिश्र जी ने स्वाधीनता

के बाद गांव के आन्तरिक और बाह्य यर्थाथ रूप की कहानियां लिखने का सुअवसर प्राप्त किया । उन्होंने इसके अलावा साठेतरी कहानियां, समान्तर कहानियां, तथा समकालीन कहानियों के बनते बिगड़ते आन्दोलनों के साथ अपने कथाकार को जोड़ने का प्रयास कभी नहीं किया । उन्होनें अपने सारे निर्णय अपनी रचना शक्ति पर छोड़ देते है ।

नयी कहानी आन्दोलन के दौरान जहां शहरी जीवन के यर्थाथ का चित्रण निरूपण सम्बन्धों के धरातल पर प्रति फलित हुआ । वहां ग्रामायांत के यर्थाथ का चित्रण करने की ओर कहानीकारों का ध्यान गया । नयी कहानी के आन्दोलन के रूप में शुरू होने से पूर्व {52-56} किसी अंचल या लोक जीवन को आधार बनाकर कहानियां लिखी गयी थी । मार्कण्डेय की सात बच्चों की मां और फणीश्वर नाथ रेणु की "रस प्रिया" जैसी कहानियां तब तक छप चुकी थी ।

सांतवें दशक की कहानी के मुख्य स्वर निषेध और विद्रोह की ओर संकेत करते हुए डा0 मिश्र ने लिखा है । "कुछ कहानियां ऐसी है । जो सब कुछ का निषेध करके चली और कुछ कहानियां ऐसी है । जिसमें निषेध दृष्टि नहीं है । विद्रोह दृष्टि निषेध उसकी एक प्रक्रिया हो सकती है । विद्रोह दृष्टि वाली कहानियां समाजिक और राजनीतिक विसंगतियों की पहचान कराती हुई उनमें अमानवीय और समाजिक प्रभाव को अभारती हुई उनसे टकराती हुई एक नयी संभावना को उभारती है । 6

नये कहानीकारों की सूची बड़ी लम्बी है । किन्तु प्रमुख लेखकों में कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, उषा प्रियंवदा, मन्नु भंडारी, फणीश्वर नाथ "रेणु," मार्कण्डेय और निर्मल वर्मा आदि उल्लेखनीय है । इन लेखको ने हिन्दी कहानियों को पिटी-पिटाई जमीन से उठाकर अछूती और व्यापक अनुभूतियों से जोड़ा । विषय और क्षेत्र दोनों का विस्तार हुआ । स्वतंत्र्योत्तर भारत के भले बुरे दोनों ही पक्षों तथा उनके ज्वलंत प्रश्नों को लेकर कहानियां लिखी गयी । इन लेखकों ने व्यक्तित्व और समाज के बीच एक कड़ी स्थापित की । उनकी कहानियों में व्यक्ति की समस्या समाज से बंधी है । समाज के प्रश्न व्यक्ति से बंधे है । यह हिन्दी कहानी की महत्वपूर्ण उपलब्धि है ।

मोहन राकेश ने नयी कहानी की पहचान बताते हुए कहा है कि " ये एक व्यक्ति की कहानी न होकर अपने पूरे समय की कहानी है । इसलिये परोक्ष का संकेत छोटा लगकर भी बड़ा ही लगता है । आज का भारतीय जनमानस ऊपर से कितना भी शांत हो, पर उसमें अंदर से हलचल है । इस निरन्तर की कुलबुलाहट संघर्ष करते समाज की कहानी में अभिव्यक्ति देनी है । 7

नयी कहानी ने समाजिक परिवेश को सही अर्थों में पहचाना है । लेखकीय दृष्टि से नयी कहानी ने पुराने रूढ़िवादी, पुराने रिवाजों, मूल्यों और विश्वासों को तोड़ा है । इसमें नयी चेतना की झलक स्पष्ट होती है । 1950 के आसपास नयी कहानी व नये कहानीकारों का प्रारम्भ हुआ । उन्होंने उस समय के बदलते परिस्थिति के आधार पर राजनैतिक, सामाजिक, परिवारिक और धार्मिक परिवर्तनों को अपनी कहानी के जरिये से रचनात्मक के धरातल पर अंकित किया ।

डा० नामवर सिंह "कहानी का यह दुर्भाग्य है कि वह मनोरंजन के रूप में पढ़ी जाती है और शिल्प के रूप में आलोचित होती है । मनोरंजन उसकी सफलता है । तो शिल्प सार्थकता ।" नयी कहानी कला को अपनी विशेषता के साथ ही सम्पूर्ण साहित्य के मान और मूल्यों के संदर्भ में देखने की आवश्यकता है । 8

डा० नामवर सिंह ने सर्व प्रथम स्वतंत्योत्तर कहानी को नयी कहानी के नाम से मान्यता प्रदान की । साठ तक पहुंचते-पहुंचते नयी कहानी में एक प्रकार की जड़ता आने लगी "अनुभव की प्रमाणिकता" "चिन्तन की गहराई" में बदलने लगी । परिवेश में भी नयापन सजीवता आ गयी । कहानी को भी अनेक नाम से सम्बोधित किया गया । अकहानी, सचेतन, समान्तर, समकालीन कहानी । साठ के बाद की पीढ़ी के लोग यथार्थ को प्राप्त करने के लिये नये धरातलों की खोज की । ये कहानी अपने पूर्ववर्ती कहानियों से अलग प्रकार की थी । उसमें जीवन का अधिक नजदीक से वर्णन होने लगा ।

आज का कहानीकार कभी कभी अपनी सहज संवेदना और सहज मस्ती की ओर लेकर जीवन मुल्यों से मुक्ति का अहसास करता है । लेखक अपने अनुभव के

अनुसार शहर या गांव या अन्य किसी जगह के यथार्थ जीवन के सत्य को प्रस्तुत करता है । वह अपने प्रति वह जीवन के प्रति बेहद ईमानदार होता है । अपने-अपने ढंग से रेणु, शिव प्रसाद सिंह, मार्कण्डेय, लक्ष्मी नारायणलाल, राजेन्द्र अवस्थी आदि ने गांव की जिंदगी की ओर संकेत किया है । निर्मल वर्मा ने आज के व्यक्ति की घुटन, परायापन, ट्रेजडी को आधुनिकता में चित्रण करते है। जैसे - "लंदन की एक रात" "पराये शहर में" में । मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव और कमलेश्वर आदि ने अपने अनुसार शहर और कस्बे के जीवन की स्थिता, संत्रासपूर्ण जीवन को चित्रित करते है । मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, सोमा वीरा, श्रीमती विजय चौहान, शशि प्रभा शास्त्री आदि लेखिका कहानीकार आज की नारी जीवन की कुलबुलाहट को उसकी पीड़ा को प्रस्तुत किया है । भारती भीष्म साहिना और अमरकांत ने मध्यवर्गीय जीवन चेतना को प्रस्तुत किया है । लक्ष्मी नारायण लाल ने गांव के उपेक्षित और पीड़ित वर्गों के अनुभव को अपनी कहानियों में लिया है ।

इसी प्रकार भारती की "गुल की बन्नो" अमरकांत की जिंदगी और जोक, डिप्टी कलकटरी, विष्णु प्रभाकर की "धरती अब भी घूमती", हरिशंकर परसाई और भीष्म साहनी की अनेक कहानियां, मनहर चौहान की घरघुसरा, राजकुमार "भ्रमर की चिरस्तिन" हिमांशु जोशी की "अभाव" "बंद पानी" आदि कहानियां यथार्थ को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है ।

रामदरश जी सन् साठ के बाद की कहानियाँ में "रचना- सत्य" अधिक प्रकाशित स्थिति में है । इनकी कहानियों में पात्रों, चरित्रों, स्थितियों या घटनाओं की विविधता मिलती है । यथार्थ को यथार्थ के बुनियादी नियमों के साथ जानने की रीत के कारण जिंदगी की अन्दरानी सच्चाइयां इन सब जटिलताओं को भेदकर प्रकट होती है ।

प्रमुख रुप से सन् 1952 के बाद ही मिश्र जी की कहानियां आयी । 1954-55 में दो-तीन कहानियां "नया पथ" "पाटल" प्रकाशित भी हुई । लेकिन फिर भी सन् 1960 के आसपास इनकी कहानियों का प्रारम्भ माना जाता है । मिश्र जी की कहानियां निम्न कहानी संग्रहों में प्राप्त होती है ।

1) खाली घर

2) एक वह

3) दिनचर्या

4) सर्पदंश

5) बसंत का एक दिन

6) मेरी प्रिय कहानियां

7) अपने लिये

इसके अलावा "इकसठ कहानियां" में ये सभी कहानियां का ही समावेश है । यहां पर केवल समस्यापूर्ण कहानियाँ की ही कथावस्तु को प्रस्तुत किया गया है । अन्य कहानियों जैसे - सीमा, खाली धर, एक भटकी हुई मुलाकात, पिता, मंगल यात्रा, सड़क, पिंजड़ा, सम्बन्ध, प्रतीक्षा, बेला मर गयी, कहां जाओगे, अतीत का विष, बसंत का एक दिन, पड़ोसिन, खोया हुआ दिन, भविष्य, आदि की चर्चा नहीं की है ।

खाली घर

"खाली घर" की कहानियाँ का रचना काल लगभग 1960 से 1968 तक के बीच फैला है । और ये कहानियां समाजिक जीवन के अनेक रूपों के अनुभवों को प्रस्तुत करती है । "खाली घर" संग्रह सात ममती प्रकाशन दिल्ली से 1969 में प्र प्रकाशित हुआ है । इन कहानियाँ ने मिश्र जी ने गांव के देहाती जीवन के यथार्थ की कहानियों को प्रस्तुत किया है । इन कहानियाँ में गांव में समाज की टूटन, बढ़ते हुए मूल्य, अकेलापन, स्वार्थ लिप्सा को प्रस्तुत किया गया है । तथा ही गांव और शहर के बीच होने वाले अन्तर्द्वंद्व को भी प्रस्तुत किया है । इन्होनें जो व्यक्ति शहर में रहता है । उनके माध्यम से गांव की तथा जो गांव में रहता है उसके माध्यम से शहर की कथा को प्रस्तुत किया है । दोनों के विचारों में गांव व शहर टकराता है । "खाली घर" संग्रह में सीमा, चिट्ठियों के बीच, मां सन्नाटों और बजता हुआ रेडियों, लाल हथेलियाँ, खंडहर की आवाज, मुक्ति, खाली घर, एक भटकी हुई मुलाकात, पिता, मंगल यात्रा, एक इन्टरव्यू उर्फ कहानी, तीन शतुरमुर्ग की, बादलों भरा एक दिन, एक और यात्रा, एक औरत: एक जिन्दगी, छूटता हुआ नगर आदि कहानियाँ संकलित है । जो इस प्रकार से है ।

चिट्ठियों के बीच

यह कहानी एक मध्यम वर्ग के परिवार की कहानी है । जो अपने परिवार (बीबी, बच्चों) के साथ शहर में रहते है । लेकिन उसके साथ गांव भी जुड़ा हुआ है । जहां पर भरा पूरा परिवार मां व बहिने भी है । उसकी आमदनी बस इतनी भर ही होती है । जिसमें वह परिवार कापेट ही पाल सकता है । लेकिन आये दिन गांव से पैसे भेजने की चिठ्ठी आती है । तो डॉ देव बौखला जाता है । वह किसको-किसको समझाये कि वह और रुपये कहां से लाये । जितना मिलता है वह खर्च हो जाता है । उसके पास कोई सदाबहार का पेड़ नहीं है ।

कई बार तो डॉ देव सोचता है । गांव से वह अपना रिश्ता नाता तोड़ दे । क्योंकि अब तो वह शहर में रहता है । उसके बच्चे बड़े होकर गांव तो खेती वाड़ी जोतने जायेगें नहीं । फिर वह उनको क्यों पैसे भेजे । फिर दूसरी ओर उसे अपनी मां की याद आती है । जिसमें बहुत कष्ट उठाकर भी अपने गहने वगैरह सब कुछ बेचकर भी उसे पाला पोसा तथा पढ़ाया लिखाया है । तो क्या वह अपने भाई, भतीजों, बहिनों के प्रति अपना फर्ज को भूल जाये । उन्हे भटकता हुआ छोड़ दे । लेकिन वह उन्हे छोड़ भी नहीं सकता है । लेकिन वह सबका बोझ भी कैसे उठाये । डॉ देव अपनी सोच-विचार के कशमकश में था तभी पोस्टमैन उसे तीन चिठ्ठियां दे जाता है । एक इनकम टैक्स के दो सौ रुपये भरने की । दूसरी - हाउस टैक्स के डेढ़ सौ रुपये जमा करने की । तीसरी- शिक्षा कर के चालीस रुपये जमा करने की । जबकि उसको इसके विपरीत उसे पुस्तक की रायल्टी होने वाली चिठ्ठीका इंतजार था । जिससे उसको कुछ पुंजी की प्राप्ति हो सकती थी । लेकिन कुछ अगर एक्स्ट्रा कमाई का इंतजाम करे तो भी उसमें से टैक्स सरकार को देना पड़ता है । जबकि वह अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में भेजते है । तब भी सरकार को शिक्षा का टैक्स देना पड़ता है । जब सब तरफ से पैसे का बोझ पड़ेगा तो आदमी का बौखला जाना स्वाभाविक ही है ।

इतने पर जब उसकी पत्नी होली के त्योहार पर बच्चों के नये कपड़े सिलवाने की बात करती है । तो वह झल्ला पड़ता है । फिर सोचता है इसमें उसका क्या दोष । बीबी, बच्चों के लिये भी तो उसे कुछ करना चाहिये । उसने अपने परिवार

के लिये तो भी कुछ सोचा ही नहीं है । सब तरफ से पैसो की मांग से भरी चिठ्ठियों के बीच वह बैठकर एक नयी कहानी लिखने लगता है ।

इसमें व्यक्ति को उम्मीद छोड़ते नहीं दिखाया है । बल्कि संघर्ष के साथ सबका सामना करते दिखाया गया है ।

माँ, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो

मिश्र जी ने इस कहानी में गांव की वास्तविकता का वर्णन किया है और राजनीतिक नेताओं पर व्यंग्य किया है । वे लोग कहते कुछ है और करते कुछ है । यह कहानी गांव और शहर दोनों की स्थिति को बताते है । शहर में रहने के बावजूद भी लेखक गांव को छोड़ नहीं सकता है । यहां पर मिश्र जी ने स्वंय अपने अनुभवों को मैं (लेखक) के रूप को व्यक्त किया है ।

लेखक अपनी मां का अंतिम क्रिया कर्म करने गांव जाता है । वहां पर उन दिनों सन्नाटा, भुखमरी, सुखाग्रस्त छाया हुआ था । लोग भूख, बीमारी और अभाव के कारण मर रहे है । लोग दाने-दाने के लिये मोहताज है । अमानुषिक और मानव की बेबसी इतनी छायी हुई है कि हलवाहे पशुओं के गोबर में से अन्न के दाने निकालकार खाते है । पशुओं के भी हड्डियां निकल आयी है । मौत का सन्नाटा चारों ओर छाया हुआ है । जैसे-मौत हर दरवाजे पर धरना धर का खड़ी है । इतनी भयावह स्थिति उस गांव की है । लेकिन इतना होने पर मंत्री जी (जो सूखाक्षेत्र का दौरा करके आये है) कहते है । "जनता का मनोबल बहुत ऊंचा है । अपनी सारी कठिनाइयों के बावजूद भी जनता बड़ी बहादुरी से लड़ रही है । मैं जनता के इस बीर-भाव से बहुत प्रभावित हूँ ।"

लेखक गांव के साथ शहर की स्थिति का भी वर्णन करते हुए कहते है कि "रोज रेडियो पर नेताओ के भाषण आते है, देश संकट में है, अन्न का अपव्यय नहीं करना चाहिये, समारोहों में एक सौ आदमी से अधिक को नहीं खिलाना चाहिये - यह एक जुर्म है ।" लेकिन यही नेता लोग अपने समारोह पर सौ आदमी बाहर खाते है तो चार सौ आदमी परदे के पीछे । ये लोग देश का काम-धाम छोड़कर इस प्रकार का अपव्यय करके धनपतियों के बेटे बेटी को आशीर्वाद देने आते है ।

नेताओ पर व्यंग्य किया गया है । खुद स्वंय गोश्त लेकर खायेगें । यहां पर जनता एक-एक दाने के लिये तरस रही है । उसके लिये केवल भाषण द्वारा ही मनोबल बढ़ायेगें । कि उनमें बड़ी शक्ति है, किसी को भूख से मरने नहीं दिया जायेगा ।

इसके साथ यहां के लोगों के रूढ़िवादी व दकियानूसी ख्यालों का वर्णन भी किया गया है । लेखक की मां भूख की वजह से बीमारी में मर गयी है । चूंकि लेखक स्वयं अपने परिवार के साथ शहर में रहता है तथा जैसे तैसे गुजर-बसर करता है उसके पास इतनी आमदनी भी नहीं है । जो हर महीने अपने पिताजी को कुछ भेज सके । इसलिये वह पिताजी को शहर में अपने साथ चलने को कहता है । गांव में वे अकेले रह कर क्या करेगें । यह जमीन वगैरह बेचकर शहर में चलकर रहे । लेकिन उनके पिताजी रूढ़िवादी है । वह कहते है कि वह अपना पुश्तैनी मकान जीते जी कैसे बेच सकते है । उनके मरने के बाद इसे अवश्य बेच देना । लेकिन जीते जी वह अपनी जन्मभूमि को छोड़ नहीं सकते । इस अभाव ग्रस्त इलाके में भूखों मरना मजबुर करते है, । छोड़ना नहीं चाहते ।

दूसरा गांव वालों के पास चूंकि खाने के लिये अनाज का दाना तक भी उपलब्ध नहीं है । लेकिन फिर भी वे लोग समारोह या अंतिम संस्कार टीम-टाम से, कर्ज उठाकर भी कार्य सम्पन्न करना पसन्द करते है । लेकिन लेखक इन सभी कार्यो के विरूद्ध विद्रोह करने वालों में से है । उनको झुठा दिखावा पसन्द नहीं है । लोगों की आलोचनाएं सहकर भी स्वयं थोड़े में ही कार्य सम्पन्न करता है ।

इस प्रकार इस कहानी में गांव की भयावह यथार्थ दार्शनिक स्थिति का दृष्टिगोचर किया गया है । साथ ही नेताओं की वास्तविक स्थिति का पोल खोलकर उस पर भी कटाक्ष किया गया है ।

लाल हथेलियाँ

"दूर के ढोल सुहावने होते है" यह कहावत किती हद तक सही है । जब नजदीक से उसका सामना करना पड़ता है । तब वास्तविकता सामने आती है । "लाल हथेलियां" भी इसी प्रकार की कहानी है । जिसमें सुभाष जैसे आजकल के पढ़े लिखे युवक आधुनिक फैशन, बाहरी चमक-दमक, स्टैंटस के बीच दौड़ते है । लेकिन यह सब बाहरी आवरण क्षण भंगुर है । बाद में केवल पछताना ही रह जाता है ।

सुभाष जब इन्टर में पढ़ता था तब उसकी शादी ममता से हुई थी । ममता, पुराने संस्कारों वाली लड़की थी, जो पति को देवता समझती थी, तथा उसे बिना खाये नहीं खाती थी । हर तरह से दुख सुख में उसकी सेवा सुश्रुषा करती थी । लेकिन इसके विपरीत सुभाष जैसे-जैसे आगे पढ़ता गया है । वैसे-वैसे उसके विचार आधुनिक होने लगे । वह गांव से शहर में आने के बाद रंगीनियों के सपने देखने लगा । आधुनिकता, फैशन का नशा उस पर हावी होता गया । जिसके कारण उसकी पत्नी उसको मोटी भैंस के रूप प्रतीत होने लगी । उसको फैशन पसन्द अल्ट्रा मॉर्डन लड़की की जरूरत थी । तभी उसको जिंदगी में एक पैसे वाली ज्योत्सना मेहता नामक लड़की उसकी जिंदगी में आती है । जब उसकी पत्नी ममता को उसके सम्बन्धों का मालूम चलता है तो वह बीमार पड़कर मर जाती है । सतीश फिर ज्योत्सना के साथ शादी कर लेता है । लेकिन जब साथ रहते है तो उसके मस्तिस्क से आकर्षण का पर्दा उठता है । ज्योत्सना अमीर बाप की बैठी होने के कारण मध्यम वर्ग की तरह चलना पसन्द नहीं करती । और आये दिन पैसों की वजह से दोनों में टकराव होता है । ज्योत्सना अपने पिता के बल पर सुभाष को खूब जली-कटी सुनाती थी ।

सुभाष के बीमार पड़ने पर उसे जबरदस्ती अपने पिता के घर ले जाती है । उसकी सेवा सुश्रुषा के लिये दो दो नर्सों का इंतजाम कर देती है । और स्वंय सारा दिन सैर-सपाटे, फिल्म देखने चली जाती है । दिन में एकाध बार तबीयत पूछ जाती है ।

अब सुभाष को केवल पछताने के सिवा कुछ नहीं रह जाता है । जो सेवा-सुश्रूषा करती थी । उसकी तरफ ध्यान नहीं देता था । केवल सपनों की दुनिया में जीता था । जब सपने टूटते है तो हकीकत का ध्यान आता है । तब सब कुछ बिखर गया होता है ।

आधुनिक फैशन, चमक तो क्षणभंगुर है । इससे जिंदगी की गाड़ी नहीं चल सकती है । व्यक्ति को दिल से नहीं, बल्कि दिमाग से काम लेना चाहिये । जो लड़की अपने पिता के पैसे के बल पर चलती है । वह कभी भी अपनी जिंदगी की गाड़ी को ठीक से नहीं चला सकेगी । यही स्थिति लाल हथेलियां में बताया गया है । सुभाष के मन में शुरू से लाल लाल हथेलियां कोमल कोमल पतली उंगलियों की चाहत थी । उसकी अपनी पहली पत्नी ममता की उंगलियां मोटी मोटी तथा भद्दी प्रकार की लगती थी जब वह उसको सिर में तेल लगाकर मालिश करती थी तब उन उंगलियों का स्पर्श उसको काटने को दौड़ता था । जब वह ज्योत्सना को घर ले आता है । तो उसकी उंगलियां देखकर उसकी वह इच्छा पूरी होती है । ज्योत्सना जब काम करने के लिये नौकर रखने के लिये कहती है । तब वह सोचता है कि काम करने से उसकी लाल हथेलियां खराब हो जायेगी । जैसी ममता की थी । अतः वह इसको नौकर रख देता है । लेकिन अब जबकि वह बीमार पड़ा उसको उसके हाथों की स्पर्श की जरूरत है । तो ज्योत्सना उसके पास भी नहीं आती है । तब वह महसूस करता है । लाल लाल हथेलियां काम करने से सुन्दर होती है । दिखाने के लाल लाल हाथ बेकार ही है । इंसान में गुण होने चाहिये । केवल सुन्दर हाथ या रूप से ही सुन्दरता नहीं होती है । बल्कि कार्यों से ही व्यक्ति महान बनता है । ममता व ज्योत्सना के इसी अंतर को बाद में सुभाष महसूस करता है ।

मुक्ति

मिश्र जी ने इस मुक्ति कहानी के माध्यम से उन लड़कियों पर होने वाले अत्याचारों का वर्णन किया है। जिनकी मर्जी, इच्छा को कुचल दिया जाता है। उनको अपने अनुरूप ढाल कर जबरदस्ती से उनसे काम लिया जाता है। लेकिन वे अपने बड़ों के आदर के भाव से सब कुछ स्वीकार करने को तैयार हो जाती है। जो विरोध करता है। उसको मार-पिट कर जबरदस्ती से करवाया जाता है। लेकिन उसमें विद्रोह की भावना पनपनी जाती है। और अंत में स्वतंत्रता मिल ही जाती है।

"मुक्ति" कहानी में चन्दा के पिता मकान बनवा रहे थे। लेकिन उन लोगों के पास इतना पैसा नहीं था। इसके लिये वे लोग मिलजुल कर दिन-रात कार्य करते थे। जिससे ज्यादा पैसा आये और मकान जल्दी तैयार हो। इस मकान की पूर्ति के पीछे चन्दा की दो बहिनें और उसके पिताजी दिन रात चरखा कातना, स्वेटर बुनना तथा टाइप का कार्य करते थे। वे लोग दिन-रात कार्य करते करते स्वयं भी मशीन के रूप में ढल चुके थे। उनके जीने का कोई मकसद नहीं रह गया था। लड़कियों की शादी भी नहीं होती है। वे न चाहते हुए दिन-रात यंत्रवत् इस कार्य में लगी रहती थी। उसकी एक बहिन को तो टी0 वी0 भी हो गयी थी। लेकिन घरवालों को इससे कोई सरोकार नहीं था। उनका उद्देश्य केवल मकान की पूर्ति है। चाहे पूर्ण होने के बाद वह उस मकान में रहे या न रहे।

लेकिन इसके विपरीत चंदा को इस मकान से लिये कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह अपनी बहिनों की तरह अपने को नही ढालना चाहती थी। वह पढ़ना लिखना चाहती थी। लेकिन उसकी पढ़ाई छुड़ा दी जाती है। उसे भी मार-पिटाई करके उस कार्य के लिये जोता जाने लगा। लेकिन वह इसका विद्रोह करती थी। उसके मन में जीने की इच्छा थी।

कुछ उम्र के बाद खाना खाना, पानी पीने के अलावा शरीर की एक भूख की जरूरत भी होती है। लेकिन लड़की होने की वजह से किसी को कह भी नहीं सकते। इसके लिये चंदा इधर-उधर तांका-झांका करती, दूसरों से सम्पर्क बनाने की

कोशिश करती थी । क्योंकि उसको पता था । उसकी बहिनों की तरह उसकी भी शादी नहीं होगी । इसके लिये वह अपनी इच्छाओं का गला घोटना नहीं चाहती थी और एक दिन मौका पाकर किसी लड़के के साथ भाग जाती है । अपने को हमेशा के लिये इस यंत्रवत् जिंदगी से छुटकारा दिला देती है ।

इस प्रकार चंदा विद्रोह करके बलि का बकरा बनने से बच जाती है । यदि घरवाले इतनी उपेक्षा नहीं करते तो शायद वह ऐसा गलत कदम नहीं उठाती ।

एक औरत एक जिन्दगी

यह कहानी एक स्वाभिमानी और मेहनती स्त्री की कहानी है। जो अपने श्रम के बल पर सबके साथ मुकाबला करके अपने सतीत्व के साथ जीती है। पुरूष उसको कमजोर और असहाय जानकर उस पर व उसके खेतो पर बुरी दृष्टि रखता है। लेकिन उसके सौम्य रूप को देखकर पीछे हट जाते है।

"एक औरत एक जिन्दगी" में भवानी नामक बहू बड़ी हिम्मत के साथ अपने दो बच्चों के लिये जीती है। उसके पति व ससूर की मृत्यु के बाद वह अपना घूंघटा छोड़ कर मर्दो की तरह खेतों में काम करने लगती है। गांव की औरतें यह देखकर उसको भला-बुरा कहती है। वे कहती है कुछ पूजा-पाठ में मन लगाओं तभी उनकी आत्मा को शान्ति मिलेगी। लेकिन वह कहती है पूजा-पाठ, तीर्थ-उपवास सभी उसके खेत है। उसकी ही सुरक्षा करूंगी तभी ही शान्ति मिलेगी।

उसको अकेला देखकर गांव के बहुत से लोग उसके रूप व खेतों को ललचाई की दृष्टि से देखने लगे। वह सभी लोगों से खेती-बाड़ी के लिये सहारा मांगती है। तो सभी मुंह फेर लेते है। एक दिनगांव का धनपतिया बड़ी ही कृतज्ञता दिखाकर उसका खेत बोने के लिये कहता है। -वह सोचता है कि मैंने उसको खेत बोकर उस पर बहुत बड़ा अहसान किया। इसके बदले में वह एक रात उसकी इज्जत पर डाका डलने उसके घर आता है। लेकिन भवानी उसके मुंह पर थूकती है। इसके बाद से वह स्वयं ही खेतों का सारा काम-काज करने लगी। अपने बच्चों को लेकर दिन-रात खेतों की निगरानी भी करती, कटाई, बुआई, पानी-सानी सभी स्वंय अकेले ही हंसकर करती थी। लेकिन जब फसल पककर तैयार हो जाती है। तो धनपतिया उससे बुआई का आधा हिस्सा मांगता है। उसके इन्कार करने पर उसके खेतो में आग लगा देता है। जिससे उसकी आधी फसल को नुकशान पहुंचता है। वह सोचती है पंचायत में शिकायत भी कोई नहीं सुनेगा क्योंकि गांव में सभी लोग पैसे वालों से डरते है। सच्चाई का मुकाबला कोई नहीं करेगा। उल्टा दोष उसी पर आयेगा। ऐसा सोचकर वह कड़वे घूंट पी जाती है। लेकिन हिम्मत नहीं छोड़ती है। न ही किसी के आगे हाथ फैला कर झुकती है। सबके व्यंग्य सुनने

के बाद वह फिर से अपने खेत खलिहानों में जुट जाती है । हल के न होने पर भी वह अपने लड़के व लड़की को खेतों में जोतती है ।

जब फसल को बाजार में बेचने जाती है तो लोग बोलते है कि ब्राहमण की औरत को बाजार में निकलना शोभा नहीं देता । तब वह फौरन उत्तर देती है । बाहमण को किसी के खेत फूंक देने, हल, बैल चुरा लेना शोभा देता है ।

वह कितनी भी तकलीफें सहती थी । कभी भी उसके लिये किसी से गिला-शिकवा या उसके मुंह पर तनाव नहीं होता था । वह सब कुछ हंस कर सहती थी। और गीत गाकर अपना कार्य पूरा करती थी ।

इसी तरह वह अपने बच्चों को बड़ा करने उसके सहारे के लिये अपने को जूझती रहती है ।

इस तरह इस कहानी में बताया गया है । यदि औरत में हिम्मत है तो वह पुरूषों से कुछ कम नहीं है । वह अपने हिम्मत के बल पर पुरूषों से आगे निकल सकती है । आज नारी केवल अबला व असहाय नहीं रह गयी है । बल्कि वह पुरूष के सहारे के बिना भी अपनी जीवन-निर्वाह कर सकती है । यही पुरूष नारी का अबला रूप देख कर उसके सामने उसको दबोचना चाहते है । लेकिन उसका चंडी रूप॰ देखकर कांपते हुए पीछे हट जाते है ।

§2§ एक वह

"एक वह" कहानी संग्रह का समय काल 1969 और 1974 के बीच का है । इसका प्रकाशन नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली से 1974 में हुआ । इन कहानियाँ में राजनीतिक दृष्टि अधिक बौद्धिक हुई है और कलात्मक संयम भी ज्यादा निखरा है । इसमें लेखक का मार्क्सवादी रूप मिलता है । मार्क्सवादी दृष्टि से प्रेरित रचना कम्युनिस्ट पार्टी की तरह सर्वहारा के अधिनायकत्व के लिये लड़ाई की स्ट्रेटेजी नहीं तैयार करती वह सचमुच हथियार नहीं बनती वह शोषक और शोषित के रिश्तों की पहचान कराती है । तथा शोषित वर्ग के जीवन की गरीबी, अभाव, अवमानना और संघर्ष के अनुभवो से गुजारकर उसके मानवीय अधिकारों का बोध कराती है । रचना क्रांति नहीं करती, क्रांति की मानसिकता तैयार करती है । "खाली घर" की कहानियों से "एक वह" की कहानियाँ में कलात्मक से निखार, गहराई तथा समय के साथ परिवर्तित समाजिक यर्थाथ को दबाव ज्यादा है । 'एक वह' की कहानियों में समाजिक यर्थाथ का दबाव ज्यादा है । यर्थाथ के भी कई आयाम है । मुख्य आयाम आर्थिक चेतना का ही है । इस आर्थिक चेतना के साथ राजनीतिक समाजिक, सांस्कृतिक चेतनाएं जुड़ी हुई है । और जुड़कर यर्थाथ के एक जटिल और संक्रात रूप की रचना करती है । "एक वह" की कहानियां इस रूप की पहचान करने के लिये प्रयत्न शील है । इन कहानियाँ में एक वह, सड़क, निर्णयों के बीच निर्णय, उत्सव, पराया शहर, दूरियां, घर, मिसफिट, आधुनिक, जमीन, पिंजड़ा, सम्बन्ध आदि कहानियां प्रस्तुत की गयी है । इन कहानियाँ में समाजिक संदर्भों में व्यक्तिगत जीवन की कोई न कोई समस्या उठाती है ।

एक वह

इस कहानी में राजनीतिक व्यंग्य किया गया है। गरीबी से जूझते हुए एक आम आदमी के जीवन चर्या का वर्णन किया गया है। ताउ नामक एक बुड्ढा व्यक्ति है। जिसको उसके भाई व भाभी ने घर से निकाल दिया क्योंकि वह बीमार पड़ कर उनके लिये बोझ बन गया था। अतः वह दिल्ली में आकर गोल चक्कर पर बैठकर कभी मूंगफलियां, कभी भुट्टा तथा कभी चने मुरमुरे बेचा करता था। वहीं गोल चक्कर उसका घर था। लंगड़ा होने की वजह से उसकी शादी नहीं हुई। लेकिन अपने भाई के छोटे लड़के के लिये थोड़ा बहुत पैसा बचाकर भेजता था।

ताउ समाजवाद के बारे में सुनता है। उनको इसके बारे में मालुम नहीं था। वे सोचते थे यह जरूर गरीबो का कष्ट हरने वाली कोई चीज का नाम है। लेकिन यहां पर तो केवल रोज पोस्टर "गरीब हटाओं" के लगाये जाते है। और मंहगाई दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। आम आदमी के जीवन निर्वाह करने वाली प्रत्येक वस्तु के दाम दिनोदिन बढ़ते जा रहे है। जिससे गरीब व्यक्ति के लिये गुजारा करना मुश्किल हो जाता है।

एक दिन ताउ को ठंड से बुखार आ जाता है। और वह मर जाता है। उसके पास ही एक कागज पर "गरीबी हटाओ" का पोस्टर लिखा हुआ था। जो इस व्यंग्य को दर्शाता है।

यह दुनिया भी पैसे वालों की है। जिसके पास यदि पैसा है तो लोग भी उसी को पूछते है। रिश्ते नाते वाले लोग भी पैसों की वजह से ही मान-सम्मान देते है। पैसा नहीं देने पर पहचानते भी नहीं है। जो अमीर लोग है वे और अमीर बनते जा रहे है। बड़े-बड़े ऑफीसर लोग भी घूस लेकर केवल पैसा बटोरने में ही लगे रहते है। उनको गरीब लोगों के दुख दर्द से कोई मतलब नहीं है। केवल नारे लगाकर ही उनको शान्ति पहुंचाते है। यही राजनीति के माध्यम से व्यंग्य को बताया गया है।

मित फिट

यह कहानी मिश्र जी ने आधुनिक स्कूलों की शिक्षा तथा उनके बच्चों की मानसिकता के आधार पर लिखी है । अमित आये दिन स्कूल नहीं जाने के लिये जिद करता था । वैसे तो उसका दिमाग बहुत तेज था । लेकिन वह हर बात में जिद, मार-पीट, झगड़ा बहुत करता था । स्कूल जाने के लिये कभी टाई निकाल कर फेंक आता तो कभी बूट के बदले चप्पल पहन कर स्कूल जाता था । वह ज्यादातर स्कूल जाने से कतराता था । कभी टीचर के मार के डर से नहीं जाना चाहता था । कभी दौड़ में उसके फर्स्ट आने पर भी प्रिंसीपल की बेटी को फर्स्ट घोषित करने कर वह गुस्सा हो जाता था ।

इन सब बातों से तंग आकर एक दिन उसका पिता उसके स्कूल में प्रिंसीपल मेडम से मिलने गया । वहां पर उसकी क्लास टीचर (जो आधुनिक फैशन से तिपी-पुती थी) कहने लगी । आपके लड़के को अनुशासन तथा ढंग से कपड़े पहनना नहीं आता । जबकि यह स्कूल का नियम है । तब अमित का पिताजी उसकी मेडम से कहते है कि कुछ बच्चे सबकी उंगली पकड़ कर चलते है । लेकिन कुछ बच्चे उस बनी बनायी लकीर पर चलने के बजाय अपने आप रास्ता बनाकर चलना पसन्द करते है । स्कूल में शिक्षा का उद्देश्य बच्चे का मानसिक विकास करना होता है । लेकिन आजकल बच्चों के विकास से ज्यादा उन पर नियम लागू होते है ।

एक दिन फिर अचानक पढ़ाई का माध्यम हिन्दी माध्यम की अपेक्षा अंग्रेजी माध्यम कर दिया । जिसके लिये फिर से नयी किताबें लाने के लिये पैसों की जरूरत पड़ती है। तथा बच्चा भी एकाएक बदल के भार को कैसे वहन कर सकता है ।

इसके अलावा रोज कभी कुछ न कुछ छोटे-मोटे कार्यो के लिये पैसे मंगवाते है । अगर घरवाले नहीं दे बच्चों को स्कूल में मार पड़ती है । घर में मांगने

से घर पर मार पड़ती इसमे बच्चों का क्यादोष है ।

आजकल की मंहगाई के जमाने में बच्चों के विकास के लिये शिक्षा का ठीक तरह से प्रयोग नहीं हो पाता है । स्कूल वाले भी अपने कमियों की पूर्ति के लिये आये दिन बच्चों से पैसों की मांग करते है । आज ताले के पैसे, पिकनिक के पैसे, नाटक के लिये पैसे चाहिये । मध्यम वर्ग का परिवार अपने तीन-चार बच्चों साथ इतनी मंहगाई के जमाने में कैसे क्षति-पूर्ति कर सकता है । वे अपना गुस्सा बच्चों पर निकालते है । बच्चे दोनों पक्षों से पीसते जाते है । उनको कोई समझ कर उनके हिसाब से नहीं चलता यही इस कहानी में बताया गया है ।

पराया शहर

यह कहानी एक शहर छोड़ कर दूसरे शहर में आने पर होने वाले संकटों की है । नौकरी करने वाले व्यक्तियों को एक जगह छोड़ कर दूसरी जगह मकान न मिलने पर किन किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है । उसका यहां चित्रण किया गया है ।

प्रो० पंकज को नौकरी के सिलसिले में दूसरे शहर में आना पड़ता है । अभी वह अपने परिवार को यहां पर नहीं लाया था । अतः परिवार को लाने के लिये उसे मकान की आवश्यकता पड़ती है । वह रात-दिन बारीश में भीगता हुआ भी मकान तलाशता है । लेकिन उसे मकान तो नहीं मिलता बल्कि ठंड व बुखार से फ्लू हो जाता है । बीमारी व कमजोरी के कारण वह कुछ भी नहींकर सकता था । उधर उसकी पत्नी दो बच्चों के साथ दूसरे शहर में थी। वह नवें महीने से गर्भवती थी । ऐसे समय दोनों को बहुत ही मुसीबतों का सामना करना पड़ता है । उसका यहां बताया गया है ।

तभी अचानक उसकी पत्नी की तबीयत खराब होने की वजह से तार आता है । पंकज एक डॉक्टर से मकान की बात करके अपनी पत्नी व बच्चों को लेने जाता है । जब वे लोग सामान लेकर आते है तो मकान-मालिक मकान देने से इन्कार कर देता है । ऐसे समय उनको बहुत ही मुश्किलों का सामना करना पड़ता है । एक तो पत्नी पूरे टाइम से थी । स्वंय उसका भी बुखार अभी पूरी तरह ठीक नहीं हो पाया था । उनके लिये मकान की समस्या खड़ी हो गयी । नया शहर वैसे ही उनके लिये अजनबी था । न ही वह इतना किसी को जानते भी नहीं थे । फिलहाल 10-12 दिनों के लिये तो मकान मिल जाता है । लेकिन चिंता बनी रहती है । ऐसा परेशानियां अक्सर नौकरी वालो के सामने आती है । अजनबी शहर में मकान मिल पाना बहुत ही मुश्किल बात है । उस परिवार की मानसिक स्थिति, तनाव को बताया गया है । कल क्या होगा । कहां जायेगें वे, इसी उधेड़बुन में कहानी समाप्त होती है ।

जमीन
=====

इस कहानी में हरिजन व्यक्ति की गरीबी, भूख को बताया है । आदमी-आदमी में कितना फर्क रखता है । जबकि ईश्वर ने सभी को समान बनाया है । सबको समान सुविधाएं देता है । लेकिन मनुष्य अपने स्वार्थवश इसमें भेदभाव करता है । वह छोटे-बड़े, उंच-नीच का भेद करके उसमें बंटवारा पैदा करता है । तथा छोटे व्यक्ति को नीच व हीन दृष्टि से देखा जाता है । तथा उसको सभी अधिकारों से वंचित किया जाता है ।

इस कहानी में मोहन नामक एक लड़का एक मंत्री जी का भाषण सुनकर ﴾सब को समान अधिकार दिये जायेगें । सबको जमीन व पानी सामान्य रूप से मिलेगा ﴿ खुश होता है । उसके मन में एक आशा चमकती है कि कभी उसके पास भी खेत होगे जिसमें वे कुछ बोकर खा सकेगें । उसको बहुत तेज भूख लगी होती है । उसको जी चाहता है कि पड़ोस के खेत में से कुछ तोड़ कर खा ले । लेकिन वह आदर्शों के आगे नहीं गिरता, चोरी करना, दूसरों की चीज को उठाकर खाना पाप है । वह ऐसा नहीं करता है वह सोचता है ऐसा करने से पाप होता है । लेकिन आज के नेता तो चोरी, झूठ, बोलना आदि तो करते है । उनके ऐसा करने से ही वह नेता बने फिरते है । जो व्यक्ति केवल आदर्शों की बाते करता है । उसे भूखों मरना पड़ता है ।

मोहन समान अधिकार मिलने की उम्मीद लेकर अपनी भूख व जजबात पर काबू पाकर जब घर में अपने पिताजी से यह बात कहता है । तो उसे मंत्री जी की असलियत को जान कर उसकी उम्मीद पर पानी फिरता हुआ जानकर मोहन बहुत ही उदास हो जाता है ।

एक छोटा बालक भी किस प्रकार अपने आदर्शों से डग मगाता नहीं है । वरन अपने जजबात पर काबू पा लेता है । लेकिन पढ़े लिखे नेता लोग केवल अपने स्वार्थ को देखते है । इंसानयित चीज को वे कहीं भूल गये है। दूसरों के हक पर अपना हक जमाना यही इंसानियत रह गयी है । यही जमीन कहानी में जमीन की उम्मीद को लेकर फिर निराश होने की तक की बात को बताया गया है। जमीन पर सबका अधिकार नहीं होता है । एक विशेष वर्ग के लोगों का ही इस पर हक होता है । यही बताया गया है ।

...111...

घर

यह कहानी पारिवारिक कहानी है । परिवार की खातिर अपना सब कुछ कुर्बान करने के बाद भी परिवार का अंग नहीं माना जाता । ऐसी ही "घर" कहानी में बलराम नामक व्यक्ति की बेबसी व लाचारी को दिखाया गया है ।

बलराम और उसके भाई को उसकी मां ने गरीबी में अपने खेत रेहन पर रखकर जैसे तैसे पाल-पोस कर बड़ा किया । बड़ा होने पर बलराम पैसा कमाने के लिये कलकत्ता चला गया । वहां से काफी पैसा कमाकर अपना मकान बनवाया तथा खेतों को भी रेहन होने से छुड़वाया । उसके भाई ने शादी कर ली थी । वह फिर भी अपने भैया-भाभी के लिये कमाता, सोचता, यह भी उनका ही खानदान है।

ऐसे ही मिल में काम करते करते एक बार कलपुर्जे की कोई छड़ उसकी आंख में गड़ गयी जिससे वह काना हो गया । काना होने के बाद उससे कोई भी शादी करने को तैयार नहीं था । लेकिन फिर भी बलराम ने यह सोच कर हालात से समझौता कर लिया। कि कोई बात नहीं, उसकी शादी नहीं हुई तो क्या है। उसके भाई, भाभी व उनका लड़का तो है । वह भी तो उनका ही खून है, उनका ही खानदान है। लेकिन एक दिन उसका भाई व भाभी भी अपना दस वर्षीय लड़का छोड़कर गुजर गये। बलराम अपने भाई की धरोहर के लिये काम करता था तथा खेती बाड़ी सम्भालता था। लेकिन जैसे-जैसे उसका भतीजा रमेश बड़ा होता गया वह उसे अपना व्यक्ति न समझकर नौकर समझने लगा । जिसने अपना सब कुछ अपने भाई की धरोहर के लिये, उस खानदान के लिये किया। उसको ही इस घर का फालतू व्यक्ति समझा जाने लगा। ऐसे ही एक दिन रमेश भी अपना लड़का देवदत्त को छोड़ कर चले बसा। उसकी आखों के सामने उसके खानदान का व्यक्ति पच्चीस वर्ष पूरी होते ही चल बसता था। लेकिन वह काना, कुंवारा व्यक्ति जिसका परिवार भी न था। अभी तक जी रहा था। इतना होने पर भी बलराम अपने भाई के खानदान को अपना समझता था। लेकिन देवदत्त गांव वालों के उकसाने पर उसको रात-दिन ताना देता था। क्योंकि बलराम अपनी सारी

जायदाद देवदत्त के नाम कर दी थी। यही सोच कर, मेरा भी तो सब कुछ इनका ही है । वह सबको अपना समझता था। लेकिन वे लोग उसको अपना नहीं समझते थे। फिर सोचता कि अपनी संतान के सिवा भाई का खानदान भी तो उसीका है। उस खानदान का हरेक जवान आदमी उसकी आंखों के सामने एक-एक करके गुजरता जा रहा था। वह जिसका अपना कोई नहीं है, अभी तक सबकी लाशें ढोने के लिये जिंदा है । उसके मन में इच्छा होती थी कि वह यह घर छोड़ कर कहीं चला जायें। लेकिन फिर यही सोचकर, अपना घर छोड़कर बुढ़ापे में कहां जायें । मरने के बाद इसी घर से उसे कंधा तो मिलेगा ही।

देवदत्त व उसकी पत्नी दोनों ही बलराम से बुरा व्यवहार करते थे तथा रूखी-सूखी रोटी खाने को देते थे । बलराम यही सोचकर चिंतित होता था, अब देवदत्त पच्चीस के करीब पहुंच रहा था। कहीं यह भी, फिर भगवान से प्रार्थना करता, मेरी उम्र भी इसको लगा दे । क्योंकि वह तो रास्ते का पड़ा किनारा था। यही कहानी समाप्त होती है।

बलराम चाहे तो कितना ही अपने भाई के खानदान के लिये अपना सब कुछ न्यौछावर कर लेता है। यही सोचकर उसका अपना कुछ न सही, तो भाई का भी उसी का हुआ । लेकिन उसके भाई के बाद उनकी संताने उनको अपना नहीं मानती थी। वे लोग उससे नफरत करते थे । अपने बनाये हुए घर में भी वह बेगानों की तरह रहता है । जैसे उसका घर होकर भी उसका नहीं था। यही इस घर की कहानी है ।

दिनचर्या संग्रह

"दिनचर्या संग्रह का प्रकाशन प्रवीण प्रकाशन दिल्ली से 1979 में हुआ था। यह मिश्र जी का तीसरा कहानी संग्रह है । इस संग्रह में भी समाजिक-राजनीतिक विसंगति को उभारने वाली कहानियों को लिया है । इस विसंगति के मूल में अर्थ का दबाव है । उसी पर आधारित कहानियों में दिनचर्या, मुर्दा मैदान, कर्ज, एक रात, बेला मर गई, कहां जाओगे, गीतू, गपशप, ऊंची इमारत, आरम्भ, जितन भइया, भागवन्त कथा, ठहरा हुआ समय, मां, एक बिखरा हुआ दिन, एक अधूरी कहानी को लिया गया है।

उन्होंने शोषण के ऊपर कहानियां तो लिखी है परन्तु जिंदगी में बहुत सी बाते होती है, हलचलें होती है । आदमी आर्थिक संघर्ष के अलावा भी और भी कई प्रकार के संघर्ष करता है । उनको मिश्र जी ने अपने अनुभव के आधार पर प्रस्तुत किया है ।

दिनचर्या

इस कहानी में गरीब वर्ग के लोगों के जीवन की एक दिन की दिनचर्या को बताया गया है। किस प्रकार वे लोग आर्थिक संघर्ष करके अपना तथा परिवार का पेट पालते है ।

मंगरी नामक एक गरीब वर्ग की नारी अपने पति व बच्चे के साथ फुटपाथ पर रहती है । वह दूसरों के घर में चौका-बरतन करके कुछ रुपयो का जुगाड़ कर लेती है । उसका पति बोझ ढोने व मजदूरी करने का कार्य करती है । उसका बच्चा बीमार पड़ा है । लेकिन वह उसके लिये दवा का इंतजाम नहीं कर सकते है । क्योंकि आजकल के मंहगाई के जमाने में डॉक्टर दवा के नाम पर पैसे लुटते है । गरीब व्यक्ति जो दिन भर इतनी मेहनत करके दो-चार आने कमा लेता है तो उससे वह अपना पेट भरे या डॉक्टर से दवा ले । डॉक्टर को दिखाने के लिये भी सारा दिन अपना काम-धंधा छोड़ना पड़ता है । मजूरी भी नहीं होगी तो दवा का पैसा कहां से लायेगे । अतः वे मंदिर के दवाखाने में ले जाकर प्रसाद खाकर तथा दुआ मांग कर ही जीवन चला लेते है ।

जबकि वे स्वंय दूसरो के बड़े-बड़े मकानों की नींव रखते है । उनका निर्माण करते है । लेकिन स्वंय के लिये खुला आसमान के नीचे पतरा डालकर झोंपड़ी बनाकर गुजारा करना पड़ता है ।

दिन-रात बैल की तरह कार्य करते है । तब कहीं एक जून की रोटी खा सकते है । रोज की आर्थिक समस्या से परेशान होकर वे आपस में ही लड़ मरते है । उनका स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो जाता है । सबेरे से रात तक काम में लगा रहना, यही उनकी दिनचर्या बन गयी है । उनको किसी से बात करने का, फिल्म देखने का या कोई और शौक करने का कोई अधिकार नहीं है । सब अधिकार तो पैसे वालों को ही होते है । गरीबो को सबकी जिल्लत भी सहनी पड़ती है। मजूरी के पैसे मांगने पर तो मालिक, दवा लेने के समय डॉक्टर, राशन लेने पर दुकानदार, फुटपाथ पर सोने से पुलिस सभी वर्ग के लोग तो डांटते ही रहते है ।

इन गरीबो की समस्या को कोई नहीं समझता है ।

आज के इस मंहगाई के जमाने में गरीब व्यक्ति के लिये एक समय का भोजन मिलेगा वरना भूखे पेट ही काम करना पड़ेगा ।

जिस वर्ग की वजह से धनी वर्ग आगे बढ़ता है । उनके मकान बनवाना समान ढोना तथा अनेक कार्य जो वह करते है । यदि नहीं करे तो देश का विकास रुक जायें । मजदूर वर्ग ही इसका आधार है । अतः इनके रोजगार को बढ़ावा देना चाहिये । तथा इनकी भी दुख-तकलीफों की तरह ध्यान देना चाहिये । तभी ये वर्ग कार्य सम्पन्न कर सकेगें । जितना इनको श्रम मिलेगा उससे ज्यादा वह काम करेंगे ।

इस कहानी में मिश्र जी एक दिनचर्या के माध्यम से उनके जीवन को करीब से दिखाना चाहते है । जिसकी तरफ आम व्यक्ति बिल्कुल ध्यान नहीं देता है ।

मुर्दा मैदान

इसमें गरीबी का यथार्थ चित्रण किया गया है । साथ ही पुलिस वालों द्वारा होने वाले दुर्व्यवहार को भी बताया गया है । जो पुलिस कानून व जनता की रक्षक कहलाती है । वह अब रक्षण की जगह भक्षण में लने लगी है । भूख ऐसी चीज है जो मनुष्य को क्या से क्या काम करने को भी मजबूर कर देती है । जब गरीब निम्न वर्ग के लोगों को रोजगार का कोई साधन नहीं मिलता है । तो वे लोग मुर्दा मैदानो से तथा कचरे के ढेर से कूड़ा के साथ लोहे के टुकड़े बटोरकर फिर उसको बेचकर अपना जीवन पालन करते है ।

गरीबी और लाचारी की स्थिति होते हुए भी बड़ा आदमी बनाने की उम्मीद में भोला का पिता मजदूरी करके भी अपने बेटे भोला को पढ़ाते है । भोला की मां भी मजदूरी करते करते एक दिन निमोनिया से बिना दवाई के मर गयी । उसकी मां के बाद भोला की बहिन घर का सारा काम काज करती तथा मजदूरी भी करने जाती थी ।

एक दिन भोला की बहिन लक्ष्मी शाम को घर वापिस नहीं लौटी । जब उसके पिता ने बेटी के वापिस न आने पर रपट लिखवाने थाने गया । तो दरोगा ने रपट लिखवाने के बजाय उसको ही डाँटा । कि उसके ही जुल्मों से तंग आकर उसकी बेटी ने आत्महत्या कर ली है । लेकिन यह बात गलत होती है । दरअसल पुलिस स्वंय या गुंडो द्वारा यह कुकर्म करते है । वे उसकी बहिन लक्ष्मी को उठाकर ले जाते है । फिर उसकी इज्जत लुटकर उसके टुकड़े टुकड़े करके सड़क पर फेंक देते है । फिर यहीं पुलिस दिखावे के रूप में जांच पड़ताल करती है । अपनी असलियत को छुपाने के लिये गरीब पर झूठा लांछन लगाती है । उल्टा उसके बाप को पकड़ कर जेल में बन्द करते है । तथा उसको मार कर, धमकाकर यह कहने पर मजबूर करते है कि किसी को भी वह इस बात का जिक्र नहीं करेंगे । उनके वर्ग का एक व्यक्ति पुलिस के खिलाफ आवाज उठाने को कहता है । तो उसे भी यह कह कर चुप कराया जाता है । पुलिस के चक्कर में पड़ने पर कहीं लेने के देने न पड़े । क्योंकि पुलिस का काम पैसा बटोर कर छाप करना है ।

भोला अभी छठीं कक्षा में पढ़ता था कुछ दिन तो वह स्कूल जाता रहा । लेकिन पिताजी के बीमार पड़ने पर दो वक्त की रोटी जुटाने के लिये उसे पढ़ाई छोड़कर, कूड़ेखाने में से लोहा, प्लास्टिक व कागज आदि के टुकड़े बटोरने जाना पड़ता है । वहीं पर उसको एक कागज का टुकड़ा मिलता है । जिस पर लिखा था कि अब सब अमीर हो जायेगें । सबको रोजी-रोटी के अवसर दिये जायेगें । बच्चों को पढ़ने की सभी सुविधाएं दी जायेगी । हमारी सरकार इस दिशा में काफी सफलता हासिल कर रही है ।

मुर्दाघर के थोड़ी दूर पर सड़क के पास मंत्री जी दौरे पर आने वाले थे । जिनके लिये सड़क के दोनों तरफ पुलिस का तांता बंधा था। भोला इन सब बातो में वक्त गंवाने से बेहतर अपने बीमार पिता को देखने के लिये जल्दी से घर जाना चाहता है । इसके लिये वह जैसे ही सड़क की ओर बढ़ता है तो पुलिस वाले उसे उसकी गरीब गन्दगी की वजह से धिक्कारते है । तथा जाने से रोकते है । लेकिन कुछ क्षणो के बाद भोला पुलिस की आंख बचाकर सड़क के पार करते ही एक नेता की मोटर के नीचे आ जाता है । नेता व पुलिस वाले को उस मासूम की जान जाने का कोई गम नहीं होता है । न ही वे उसे अस्पताल ले जाते है । बल्कि वे मंत्री जी की अगवानी के लिये तैनात खड़े रहते है । तब तक भले ही गरीब की जान क्यों न चली जायें ।

गरीब व्यक्ति को सभी धिक्कारते है । क्या उनको जीने का कोई हक नहीं है । सभी सुख-सुविधाएं बड़े लोगों व नेताओं के लिये है । उनकी कारों के नीचे गरीब व्यक्ति का कुचला जाना नाली के कीड़े के समान है । गरीबोंसे वोट लेने की खातिर में वे उन्हें केवल गरीबी हटाने का आश्वासन देते है । हकीकत करते कुछ नहीं है । आज का मनुष्य इतना स्वार्थी बनता जा रहा है । कि उसके हृदय से ममता, संवेदना, मानवीयता, सहानुभूति, करुणा, स्नेह जैसे भाव निर्लिप्त हो गये है। गरीबी समाज के लिये बहुत बड़ा अभिशाप है । गरीबी का अंत करते करते उनके जीवन का ही अंत हो जाता है । पुलिस केवल औपचारिकता पूरी करने के लिये होती है । पुलिस भी गरीब व्यक्ति के प्रति न्याय करने की

अपेक्षा पैसे वालों से पैसे बटोर कर उल्टा गरीब व्यक्ति को मर धमका कर फंसाती है ।

"मुर्दा मैदान" कहानी में आज की यथार्थ स्थिति को दर्शाने के लिये ही लेखक ने इस कहानी की रचना की है ।

कर्ज

प्रेमचन्द की कहानियों की तरह मिश्र जी ने अपनी कहानियों में व्यक्ति का जमींदार द्वारा शोषण का वर्णन किया है। एक बार व्यक्ति कर्जा लेता है। तो उसे आजीवन सूद उतारते उतारते भी छुटकारा नहीं मिलता है। वह जीवन भर उनका गुलाम बन कर रह जाता है। उनकी हंसी-खुशी सब समाप्त हो जाती है।

ऐसी ही "कर्ज" कहानी में भीखू ने ठाकुर धर्मचन्द से अपनी शादी में 200 रूपयों का कर्ज लिया था। दोमहीने के बाद सूद समेत वह बढ़कर 300 रूपया हो गया। जिसको उतारने के लिये भीखू रात के समय मिल में नौकरी करता है। तथा तथा दिन में मेहेनत मजदूरी करता है, दिन-रात जुटकर इतना परिश्रम करने के बाद वह इस कर्ज से मुक्त नहीं होता है।

गरीब व्यक्ति और गरीब बनता जाता है इसके विपरीत अमीर व्यक्ति और अमीर बनता जाता है। ठाकुर धर्मचन्द जैसे स्थायी लोग अपनी बीबी-बच्चों की भी खबर चाल नहीं लेते है। केवल शहर में धन बटोरने में लगे रहते है। ऐसे व्यक्ति सेठ साहूकारों की चापलूसी करके, उनको दावतें देकर, पुलिस व नेता सभी को पेनकेन उपाय से अपना बना लेते है। धीरे धीरे पैसा इकठ्ठा करके चाय की दुकान खोलता है। तथा मजदूरों को कर्ज देकर सूद बटोरता है। समय पर नहीं देने पर अपने गुण्डे भिजवाकर उससे बसूल करवाते थे।

जबकि भीखू अपना पेट काट काट करके गांव में अपनी बूढ़ी मां-बाप व पत्नी के लिये कुछ पैसे भेजता था। बाकि सेठ धर्मचन्द का कर्जा उतारने के लिये उसे देता था। अपने सुख चैन, नींद आराम को छोड़कर दिन-रात परिश्रम करता था। इसके अलावा वह महीने में दो बार अपना खून भी बेचता था।

शहर में भी इतनी मेहेनत करने के बाद व्यक्ति को इतनी मजदूरी नहीं मिलती है। जिससे इस मंहगाई के जमाने में वह अपना गुजर-बसर कर सके। भीखू की पत्नी भी ऐसे ही लिखती है। कि वह भी शहर की चकाचौंध में घरवालो को भूलकर खुद ऐशो आराम का जीवन बसर करते है। लेकिन वास्तविकता ऐसी नहीं थी।

धर्मचन्द जैसे लोग गरीबों का खून चूस-चूस कर पैसा बटोरते है । उनके दिल में दया नाम की कोई चीज नहीं है । वे तो लोगो का कफन छीनकर भी कर्जा वसूलने वाले है । भीखू भी जिंदा होते हुए भी मुर्दो के समान अपनी जिंदगी को ढोता हुआ धर्मचन्द का कर्जा उतारने के लिये घिसटता-पिटता चलता ही रहता है । शोषण की वास्तविकता का चित्रण किया गया है ।

एक रात

इस कहानी में शिक्षित व्यक्तियों के लिये नौकरी न मिलने की दशा में किस तरह गुजर बसर करना पड़ता है वह बताया गया है । पढ़ाई की भी कोई मूल्य नहीं रह गया है । आजकल आबादी बढ़ने के साथ बेरोजगार भी बढ़ता जा रहा है ।

"एक रात" कहानी में भी प्रवीन एम0 ए0 पास है । लेकिन उसको नौकरी नहीं मिलती है । वह सोचता है, एम0 ए0 का सिक्का घिस चुका है अर्थात इसका अब कोई मूल्य नहीं रह गाया है । तो बेकार बैठने से पी0एच0डी0 शुरू कर रखी है । इस उम्मीद से शायद पी0 एच0 डी0 पूरी करने के बाद नौकरी मिल जायेगी ।

उसके घर में उसकी पत्नी और एक बच्चा भी है । नौकरी न होने के कारण आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है । यहां तक बीबी के सभी जेवर भी बेच डाले है । पैसों की हर समय चिंता खोये रहती है । कि गृहस्थी किस तरह चलेगी । लेकिन लोग कहते है । सुख दुख तो आते रहते है । आप निश्चिन्त होकर पी0 एच0 डी0 कर लीजिये । उस समय उसके मन में विचार आता है कि क्या मैं लोगों के उपदेशों से तो रोटी नहीं खा सकूंगा । सब तरह से तंगी होने पर तथा कुछ काम-धंधा न होने पर वह अपने आप में ही अपने को हीन समझता है । उसको अपना स्वाभिमान समाप्त होता नजर आता है । प्रवीण को कुछ भी सुझता नहीं है कि वह क्या करे या क्या न करें ।

यदि उसको कोई मित्र मिलता है तो वह वहां से भागने की पेखी/कोशिश करता है । कि कहीं उसे चाय पिलानी पड़े क्योंकि चाय पिलाने के लिये उसके पास पैसे नहीं है । वह औपचारिकता वश इतने सालों के बाद मिलने पर भी मित्र को घर आने के लिये आमंत्रित नहीं कर सकता है । सोचता है, यदि उसके आमंत्रित करने पर वह सचमुच घर आयेगा तो वह उसे क्या खिलायेगा । यही सोचते सोचते उसे आत्म-ग्लानि होती है । किसी से उधार मांगते भी शर्म महसूस होती है । वह कुछ मांग नहीं सकता है । क्योंकि उसका मन उसे धिक्कारता है । सब तरह से निराश होने के बाद जब वह घर पहुंचता है तो उसे मालूम चलता है कि उसकी सहपाठिनी इसी शहर में किसी काम काज की वजह

से आ रही है । प्रवीण के यहां ही ठहरेगी । यही सोच-सोचकर प्रवीण को सारी रात नींद कहीं आती कि वह उसे क्या खिलायेगा पिलायेगा । ऐसे समय में उसको किसी का आना अच्छा नहीं लगता है । सारी रात भर इन्हीं परेशानियों की उधेड़ बुन में सो नहीं पाता है । वह नहीं चाहता था कि उसकी परिस्थिति का किसी को ज्ञान हो, वह अपनी गरीबी का मजाक नहीं बनवाना चाहता था ।

इस प्रकार"एक रात" कहानी में प्रवीण रात भर अपनी उधेड़ बुन में ही लगा रहता है । कैसे वह परिस्थिति का सामना करे । व्यक्ति चाहे कितना भी पढ़ा-लिखा क्यों न हो लेकिन यदि उसके पास नौकरी नहीं है तो वह कुछ नहीं कर सकता । इस जमाने में डिग्रीयों पाने के बावजूद भी डोनेशन देने से नौकरी मिलती है । डिग्री, गोल्ड मेडल केवल दिखावे के लिये रह गये है । पता नहीं कब यह अंधेरे जायेंगे और उजाले के रास्ते दिखायी दे देंगे ।

एक अधूरी कहानी

यह कहानी नारी जीवन को लेकर लिखी गयी है । जिसको जब चाहे पुरूष लांछित भी करता है, ठुकराता है, चाहे जैसा भी सलूक करता है । यदि औरत किसी वातावरण से प्रभावित होकर किसी दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करती है । तो दोष पुरूष के बदले औरत को दिया जाता है । उसे बदनाम किया जाता है । वेश्या कहा जाता है । लेकिन रामदरश मिश्र ने नारी को ऊंचा उठाकर उसको तपस्विनी का स्थान दिया है । उसे देवी बनाया है ।

"एक अधूरी कहानी" में भउजी का ऐसा ही चित्रण मिलता है । उसका पति सात साल पहले उसे छोड़कर सिंगापुर पैसे कमाने चला गया था । भउजी बहुत ही सुन्दर और जवान थी । वह हमेशा अपने पति को आने के लिये लिखती थी । लेकिन उसके पति ने धीरे धीरे घर में पैसा भेजना कम कर दिया । जिससे घर में तंगी रहने लगी । भउजी का जेठ भी नाच मंडली आदि घर में लगाने लगे । उन्होंने धीरे धीरे भउजी को उकसाना शुरू कर दिया कि उसके पति वहां पर दूसरी बर्मिन रख ली, तभी वह पैसे भी नहीं भेजता । वह उससे ऐसा कहकर उसके साथ पाप कर्म करवाने लगा । जब वह औरत की भूख में परेशान होकर कुछ कर गुजरती है तब लोग उसे छिनाल कह कर बदनाम करते है । औरत को लोग न जाने और बहुत कुछ समझते है लेकिन औरत नहीं समझते है । एक बार जो औरत बदनाम होती है तो जीवन भर उबर नहीं पाती । मर्द चाहे जो भी करता रहे, वह हमेशा गंगा जल की तरह पवित्र रहता है । पुरूष घर पर या बाहर अपनी भूख मिटाने के लिये साधन खोज लेते है । पर उनका अधिकार माना जाता है । लेकिन औरत को अपने मर्द के सिवा दूसरे किसी से हंस कर बोलने का भी अधिकार नहीं होता है । स्त्री एक बार गिरती है तो गिरती ही चली जाती है । क्योंकि पुरूष उसको सहारा देने या अपनाने के स्थान पर उसको केवल अपनी तृप्ति मात्र का साधन ही समझते है ।

जब भउजी गर्भवती होती है तो वह अपने जेठ से अपने बच्चे को अपनाने के लिये कहती है तो वह उसे गर्भगिरवाने के लिये कहता है । तब भउजी को

अहसास होता है कि अब वह इस घर में नहीं रह सकेंगी । उसके पति के लौट आने के बाद वह भी उसको अपनायेगा नहीं । उसके जेठ को तो कोई कुछ नहीं कहेगा सारा दोष उसी पर होगा ।

तब भउजी अपने जेठ को दोस्त सोनार जाति वाले सुन्दर (जो उस पर पहले से ही नजर रखता था) के साथ घर छोड़ कर भाग जाती है । जिस नरक से बचने के लिये उसने घर छोड़ा उसी नरक का उसे यहां भी शिकार होना पड़ा । सुन्दर उससे अपनी तृप्ति के लिये पशुता का व्यवहार करने लगा । वह उसे मारता-पिटता भी था । जिस व्यक्ति ने उनको रहने के लिये जगह थी उसके साथ सम्बन्ध बनाये रखने का शक करने लगा । इसी वजह से वे यह घर भी छोड़ कर एक दूसरे कल्लु पहलवान के घर रहने लगे । उसकी तो नीयत पहले से बहुत खराब थी । भउजी के बहुत मना करने पर भी सुन्दर उससे ज्यादा मित्रता बनाने लगा । उसने सुन्दर को नौकरी भी लेकर दी । धीरे धीरे उसे शराब पिलाता तथा उसको पैसे बगैरह की मदद भी करने लगा । ताकि वह दोस्ती का अहसान जताकर कुछ प्राप्त कर सके । मौका देखकर कल्लू पहलवान उससे सम्बन्ध बनाने के लिये कहता है । तथा मना करने पर सुन्दर को मारने की धमकी भी देता है । डर से सुन्दर तो भाग जाता है । लेकिन भउजी पर जबरदस्ती करने पर वह उसको खत्म कर देती है ।

कानुन भी पैसे वालों का साथ देता है । जुठी गवाहियों व बयानों द्वारा भउजी को खून के इल्जाम में 10 साल की सजा हो जाती है ।

औरत एक बार घर छोड़ती है तो उसे सब जगह पुरूष की लोलुप दृष्टियों का सामना करना पड़ता है । कोर्ट में भी वकील तथा गवाह उसके साथ सम्बन्ध स्थापित की बात कहकर उसको बदनाम करते है । पुरूष को कोई कुछ नहीं कहता है । सारे अधिकार उसके लिये ही बनाये जाते है ।

जेल से छुटने के बाद वह अपने गांव जाती है । उसी मिट्टी को स्पर्श कर वहीं उसका अंत हो जाता है । यदि लोगों को यह मालूम चलता कि यह उनकी भउजी है तो वे कभी उसका इस प्रकार से अंतिम संस्कार नहीं करते बल्कि उस पर थूकते । लेकिन लेखक नारी के प्रति श्रद्धा भाव रखते है । वे समझते है इसमें भउजी

...125...

का कोई कसूर नहीं था । जो कुछ भी उसने किया । वह उसको परिस्थिति वश मजबूर होकर करना पड़ा । उसने अपनी चाहत पूरी करने के लिये कभी गलत कार्य नहीं किया, जबकि वह तो अपने पति के वियोग में सात साल पहले भी रह चुकी थी । उसके जेठ की गलत निगाह की वजह से, उसे बदनामी से बचने के लिये घर छोड़कर कहां कहां नहीं भटकना पड़ा । फिर भी सभी लांछन उस पर ही लगाये गए.

लेखक इस कहानी के द्वारा औरत का सही रूप बताये है । औरत को भ्रष्ट करने में मर्दों का ही हाथ होता है । परन्तु यहां पर लेखक ने उसे तपस्विनी के रूप में स्वीकार कर उसको श्रद्धांजिली अर्पित करते है ।

सर्पदंश संग्रह

"सर्पदंश संग्रह" का प्रकाशन पराग प्रकाशन, दिल्ली से 1982 में हुआ । इसमें प्रस्तुत कहानियाँ को नये दौर की कहानियां भी कह सकते है । ये कहानियाँ अपनी अनुभव शीलता के बीच बौद्धिक दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक प्रखर हुई है । सर्पदंश में अनुकूल परिस्थितियां और पात्रों के संदर्भ में निर्णयात्मकता की सृष्टि की है और यह भी सांकेतिक रूप में । इन कहानियों में सर्जनात्मक दृष्टि से उपलब्धि भी प्राप्त की है । इन कहानियों में अतीत का किस्सा, सर्पदंश, आखिरी चिट्ठी, टूटे हुए रास्ते, घर लौटने के बाद, प्रतीक्षा, मनोज जी, पशुओं के बीच, इज्जत, सवाल के सामने आदि कहानियां है ।

सर्पदंश

"सर्पदंश" कहानी में सांपों के समान जहर उगलने वाले जमींदारों के दुर्व्यवहार का वर्णन किया जाता है । जो गरीब लोगो पर किस प्रकार से जुल्म करते है लेकिन फिर भी उन्हे कोई कुछ कहने से डरता है ।

इस कहानी में गोकुल एक गरीब व्यक्ति था । उसके पास जो खेत था उसको उसने जोता-बोया, जब फसल तैयार हो गयी तो गांव के प्रधान के मन में बेईमानी आ गयी और उसने उसका खेत बदल कर उसको बंजर जमीन दे दी । गरीब व्यक्ति को कुछ खाने-पहनने को भी नहीं था । जब उसने अपने परिवार को भूख से बिलखते देखा तो उसे सहन नहीं हुआ वह प्रधान के खेत से कुछ फलियां तोड़ने चला गया । तभी उसको वहां पर एक सांप ने काट लिया । सांप के काटते ही गोकुल ने अपनी आंखे मूंद ली । सोचा, चलो, इस जिंदगी से तो मुक्ति मिल गयी ।

गांव वाले उसको बेहोशी की अवस्था में उठाकर भवानी बाबा के पास झाड़-फूंक के लिये ले आते है । उसको इस हालत में देख कर कुछ लोग कहने लगे । यह प्रधान के खेत से चोरी करने गया था तभी सांप ने काटा, अच्छा हुआ । उसे चोरी का फल मिल गया । उसकी मरणासन अवस्था में भी लोग उसके जीने की कामना करने के बजाय उसको कोसते है ।

भवानी बाबा मंत्रों का उच्चारण कर करके उसके जीने की कोशिश कर रहे थे । लेकिन कुछ फर्क ही नहीं पड़ रहा था । एक प्रकार से गोकुल ने जीने की हिम्मत छोड़ दी थी । वह भूख व गरीबी से बहुत निराश हो गया था । जब सांप ने उसे काटा तो मानो उसको अपनी बेबसी से छुटकारा मिल रहा हो । लेकिन जब उसकी इस अवस्था को देखकर उसके परिवार के लोग रोने बिलखने लगे । तो उसे एकाएक जागृति आयी । जैसे वह सांपों के जहर से लड़ रहा हो । उसमें एकाएक जीने की इच्छा जागृत हुई वह सोचने लगा, मैं अपने परिवार के लिये अपने भाईयो के साथ मिलकर अपने हक के लिये प्रधान से लड़ूंगा ।

उसके ठीक होने ही प्रधान ने उसे बुलवाया तथा चोरी के इल्जाम में उसे बहुत पीटा । प्रधान की शक्ति के आगे गरीब हरिजन क्या कर सकता था । वह सांपो के जहर से तो मुकाबला करके जी सका लेकिन प्रधान का मुकाबला न कर सका । उसको अपनी जिन्दगी से हाथ धोना पड़ा । इस प्रकार एक गरीब व्यक्ति का शोषण का अंत हुआ ।

इस कहानी में यही बताया गया है कि जमींदार अपने पैसे व ताकत के बल पर सबसे जबरदस्ती कुछ भी करवा सकते है । सभी गरीब लोग उनको अपना मालिक समझकर उनका जुर्म बर्दाश्त करते है । उनके खिलाफ आवाज उठाने से डरते है ।

शोषण का जहर सांप के जहर से भी कितना जहरीला है । सांप के काटे हुए जहर से तो व्यक्ति जी उठता है । लेकिन जमींदार के शोषण द्वारा व्यक्ति कभी जी नहीं सकता । उसका जहर सांप से भी अधिक जहरीला है । वह उसका अंत ही कर देता है । पुलिस, न्याय भी उसका कोई साथ नहीं देते है । सब पैसे के बल पर झूठी गवाही देते हैं । गरीब व्यक्ति ऐसे ही जुल्म सहकर मरते जाते है । यही बताया गया है ।

आखिरी चिठ्ठी

यह एक पारिवारिक कहानी है। जो आजकल आम घरों में देखने को मिलती है। जब लड़के बड़े हो जाते है तो स्वार्थवश अपनी मां व बहन को अपने साथ रखने में बोझ महसूस करते हैं। वे कोई जिम्मेदारी उठाने के लिये तैयार नहीं होते।

"आखिरी चिठ्ठी" में प्रभा के पिता पुलिस ऑफीसर थे। जब तक वे थे तब तक तो सब ठीक-ठीक था लेकिन उनका देहान्त होने के बाद प्रभा के तीनों भाई प्रभा व उसकी मां का बोझ उठाने से कतराने लगे। फिर तय किया कि वे सब एक-एक साल तक इनको अपने घर में रखेंगी। जैसे मां न होकर कोई सामान की वस्तु हो। जबकि तीनो भाई अच्छे-अच्छे ओहदे पर थे। लेकिन कोई भी जिम्मेदारी उठाने के लिये तैयार न था जब तक वह भाइयो के पास रही तब तक उन्हें अपमान पूर्वक जिंदगी के नरक को भोगना पड़ा। बाद में निराश होकर मां बेटी अलग रहने लगी। फिर भी मां के हृदय में बेटों के प्रति प्यार उमड़ता है। कहीं हमारे अलग रहने से लोग हमारे बेटो को नालायक न समझे। एक दिन मां भी बीमार पड़कर अपनी बेटी को अकेला छोड़ कर चल बसी।

बड़ा भाई प्रभा को अपने यहां ले गया और यह तक हुआ कि इसकी शादी तीनों भाई मिलकर बराबर खर्चे से कर दें। जैसे वह उनकी सभी बहिन न थी। यह शादी वे दुनियादारी निभाने के लिये कर रहे थे। तीन भाईयों के होते हुए भी उसे जबरदस्ती एक नरक से निकाल कर दूसरे नरक में डाल दिया हो। कहने को तो उसका पति बी0 डी0 ओ0 है। लेकिन इन्होने भी शादी करके पत्नी को जुल्म सहने के लिये गांव में अपनी मां व बहिन के पास छोड़ देते है। स्वयं शहर में रहते थे। महीने में एकाध बार आते और मां-बहिन द्वारा शिकायतें सुनकर अपनी पत्नी को मारते व गाली-गलोंच निकालते। यहां पर भी भारतीय नारी पुरुष के अत्याचारों को सहन करती है। लेकिन प्रभा अपने आप कला व कविता लिखना में व्यस्त रखती है। उस पर भी उसे गलत समझा जाता है। उसका अपमान किया जाता है। ससुर यदि बहु के साथ थोड़ी हमदर्दी करते तो उन्हें भी तिरस्कृत किया जाता है।

तभी प्रभा को एक बेटी पैदा होती है । वह उसीको अपनी कला मानकर उसको अपने जीने का आधार बनाती है । उस पर बेटी होने के लिये उसे कोसा जाता । लेकिन फिर भी वह अपनी बेटी पर कविताएं लिखा करती थी । एक दिन उत्याचार सहते सहते तथा कार्य करते करते वह बीमार होकर मर जाती है । तथा अपनी बेटी को अकेला छोड़कर, तथा अपनी कला व कविताएं अपनी पहचान बताने के लिये विनोद भइया के पास भेज देती है ।

विनोद जो उसका सगा भाई न था लेकिन उसके साथ भाई से बढ़कर आत्मीय सम्बन्ध थे । वह अपने दुख-सुख विनोद को चिट्ठी लिखकर बताया करती थी । पहले वह सोचती है कि मरने से पहले अपनी बेटी को उसके पास छोड़ दूं, फिर यह सोचकर कि अपने सगे भाइयों ने तो उसे सहारा न दिया । यह तो फिर भी सम्बन्धो से अलग है । पति, सास, ननंद व भाई यह सभी सम्बन्ध तो समाज द्वारा नारी को सुरक्षा प्रदान करने के लिये बनाये जाते है । जहां हर व्यक्ति को तो मुक्ति ही मिलती है, न सुरक्षा, इन सभी सम्बन्धो से पर एक सम्बन्ध और होता होता है जहां पर आत्मीयता, मानवीयता तो प्राप्त होती है । लेकिन समाज उसको स्वीकार नहीं करता । किस अधिकार से उसको अपना कहा जा सके । अंत में वह अपनी बेटी को उसके भाग्य के सहारे ही छोड़ जाती है । अंतिम चिट्ठि वह विनोद भइया को भेजकर स्वंय को मुक्त करके अपनी बेटी को अत्याचारों की पुनरावृति से लिये छोड़ जाती है ।

लड़की होना समाज के लिय भी कितना बड़ा अभिशाप है । लड़की को मायके से ससुराल तक दुख-ही सहने पड़ते है । उसको स्वतंत्र रूप से जीने का हक क्यों नहीं है । आखिर वह भी इंसान है ।

टूटे हुए रास्ते

यह कहावत कहीं हद तक सही है । "पूरे को पाने की लालच में आधा भी छूट जाता है ।" आदमी को उतने ही पांव पसारने चाहिये जितनी चादर हो, ज्यादा की लालच न करके थोड़े में ही संतोष करना चाहिये ।

"टूटे हुए रास्ते कहानी में राम वर्मा की एक छोटी सी साइकिल मैकेनिक की दुकान थी । वह जैसे-तैसे अपने परिवार के साथ गुजारा बसेरा कर लेता था । लेकिन एक दिन उसने एक अखबार में इश्तहार पढ़ा कि बहरीन में कुछ कारीगरों की आवश्यकता है । उसके मन में ज्यादा पैसा कमाने की तथा सुख-सुविधाओं से जीने की तमन्ना जाग उठी । वह उस नौकरी को पाने की लालच में अपनी दुकान, खेत, पत्नी के जेवर बेचकर तथा दोस्तों से कुछ उधार लेकर पांच हजार रुपये लेकर दिल्ली आता है । सोचा, कमाने के बाद सबका पैसा उतर जायेगा । मगर दिल्ली में जाकर उसने कम्पनी वालों को पांच हजार रुपये जमा करा दिया । जब सात दिनों के बाद वहां गया तो कम्पनी वालों का नामोनिशान नहीं था । उन लोगों ने भी पैसा कमाने के लिये लोगों को ठगने के लिये यह एक स्कीम निकाली थी । लेकिन राम वर्मा ने तो अपनी जिंदगी की सब कमाई दांव पर लगा दी थी । वह अब सब कुछ गंवा कर किस मुंह से घर वापिस जाता । क्योंकि जिनसे उधार लिया वे उसे वापिस चुकाना ही था ।

वह सोचता है कुछ पैसे इकठ्ठ कर लो फिर घर लौट जाऊंगा । लेकिन दिल्ली जैसे महानगर चोर उचक्के भी भरे रहते है । जो शरीफ आदमी को चोर तथा चोर को शरीफ आदमी समझते है । उसकी कोई जेब काट लेता है तो पुलिस चोर को पकड़ कर उसको ही मुजरिम बनाकर पकड़ कर जेल में डाल देती है । तथा जेल से छूटने के बाद कोई भी उसे नौकरी देने के लिये तैयार नहीं होता । सभी उसे संदेह की दृष्टि से देखते है । बड़े शहरों में कोई किसी पर विश्वास ही नहीं करता है । अतः उसे पैसे इकठे करने के लिये कुली का काम करना पड़ता है ।

जिसका एक बार सब कुछ लुट गया हो उसको फिर से बनाना कितना मुश्किल होता है उसे तो कोई नौकरी भी नहीं मिलती है । जिससे वह कुछ पैसे

जमा कर घर लौट सके । मजदूरी करने से तो पूरी उम्र ऐसे ही निकल जायेगी, न ही वह अपना पेट भर सकेगा, नही घर वालों को कुछ भेज सकेगा ।

घरवाले तो यह सोच रहे होंगे कि वह विदेश में कमा रहा होगा । वहां की आधुनिकता चकाचौंध में फंसकर हमलोगों को भूल गया होगा । लेकिन उनको असलियत का पता कैसे करें । वह तो उनको पत्र लिखकर भी नहीं बता सकता क्योंकि बहरीन तो वह गया ही नहीं है । सब तरफ से उसके रास्ते टूट से गये है ।

इस कहानी के द्वारा लेखकने बताया है कि बड़े शहरों में लोग अपने स्वार्थ के लिये दूसरों को ठगते है । वे ये नहीं सोचते कि किसी ने नौकरी के लिये अपना सब कुछ दावे पर कुछ पाने के लिये ही लगाया है । लेकिन किसी को इसकी जरूरत नहीं है । सभी केवल अपना फायदा सोचते हैं । दूसरे की दुनिया उजाड़ने से उन्हे कोई सरोकार नहीं है । आदमी-आदमी पर विश्वास नहीं रह गया है ।

जिसका पहले से सब कुछ चला गया उसको यदि कुछ सहारा दिया जाये तो फिर से वह उनपर आ सकता है । लेकिन लोग उसे संदेह की दृष्टि से देखते है । विश्वास, दया, सहानुभूति लोगो के दिलो से निकल गये । सब जगह स्वार्थ, बेईमानी ही रह गये है । यही दिखाया गया है ।

घर लौटने के बाद

इस कहानी में बुजुर्गों के प्रति होने वाले अत्याचारों को बताया गया है । पूरी उम्र काम करने के बावजूद भी जब उनके आराम का समय आता है तब भी उनसे काम लियाजाता है । तथा बार बार उन्हेंबेइज्जत किया जाता हैं । लेखक ने इस कहानी में इसी बात का चित्रण किया है कि "घर लौटने के बाद" यानि रिटायर होकर घर में बैठने के बाद व्यक्ति की घर में कैसी इज्जत होती है । उन्होंने बुजुर्ग व्यक्ति का प्रतीक एक बूढ़ें गधे से किया है । जिस प्रकार गधा पूरी उम्र भार ढो-ढोकर अपने मालिक की सेवा करता है । लेकिन उसका मालिक उसके बूढ़े होने पर वह उसकी बरबाद भी नहीं करता है । क्योंकि अब माल ढोने की स्थिति में असहाय हो गया है । अतः उसके शरीर को चील-कौवे को खाने के लिये बेफ़िक्र से छोड़ दिया है ।

ऐसे ही एक व्यक्ति, जो कभी पूरे परिवार के लिये कमा कर उनकी सुख-सुविधाएं की प्रत्येक चीज जुटाता रहा । आज जब वह असहाय हो गया है । शरीर से क्षीण हो गया, तब उसी परिवार के लोग नौकरों की तरह उससे व्यवहार करते है । अपने ही घर में वह अजनबी की तरह रहता है । अपने छोटे भाई और उसकी संतानों का ही अपना मानकर उन्हें जीवन रस पिलाता रहा भाई की संतानों को प्यार की छोद में बड़ा किया । आज जब दीनाभाई रिटायर हो गये है तो उन्हें दुतकारा जा रहा है । जो घर उनके ही पैसों से बना, वही अब उनके लिये पराया बन गया है । उसने अपने लिये कुछ पैसा भी जमा नहीं किया । सब पैसा इनके पीछे खर्च कर दिया । अब पैसा न होने की वजह से कोई पूछता भी नहीं है ।

घर में सब लोग उनकी उपेक्षा करते है। अगर वह कोई बात बोलते है तो उन्हें बोला जाता है । आप केवल हरि स्मरण करें, इन पचड़ों में न आओं । जब तक पैसा था तब तक सभी जी हजूरी करते थे । अब पैसा- न होने पर मन्दिर के देवता को तरह बन्द कर लेते है, कोई राय नहीं लेता ।

लेखक यही बताना चाहता है । आज व्यक्ति में इतना स्वार्थ आ गया है कि वह अपने परिवार के लोगों में भेदभाव करने लगे । आज पैसा ही सब कुछ हो गया है । पैसा होगा तो सब सलाम करेंगे । नहीं होगा तो कोई देखेगा भी नहीं । नाते रिश्ते तो केवल दिखावे के रह गये है, या दुनियादारी निभाने के । पैसों से रिश्ते-नाते बनाये जाते है । दुनिया ही पैसों की दोस्त है । यही इस कहानी में बताया गया है ।

इज्जत

इस कहानी में गरीबों पर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध जमींदारों के शोषण को बताया गया है । जो अपनी इज्जत को तो इज्जत समझते है। तथा गरीबो की इज्जत की कोई परवाह नहीं करते है ।

"इज्जत" कहानी में जमींदार मजदूरो से काम भी पूरा लेते है तथा उन्हें तनखाह भी नहीं देते है । ऊपर से उनकी बहिन-बेटी की इज्जत से खिलवाड़ करते है । विरोध करने पर कहते है । तुम लोगों की क्या इज्जत है तुम लोग तो स्वंय बिकती रहती है ।

जब जमींदारों के जुर्म से तंग आकर उनकी स्वंय की बहू आत्म हत्या करने के लिये कूएं में डूबती है तो उस समय उनको अपनी इज्जत की चिंता होने लगती है । कहीं कोई आ गया या किसी ने देख लिया तो क्या कहेंगे ।

मजदूरों का नेता अशोक जब मिल-मालिक के नौकर को कूएं में उतरने के लिये कहता है तो उस समय भी छूत-छात को सोचते है कि हरिजन उनकी बहू को कैसे छुऐगा । और स्वंय निकालने के लिये कुएं में गिरने से डरते थे । जल्दी-जल्दी उस नौकर को ही भेजकर बहू को निकलवाते है । कहीं कोई देखे तो उनकी बदनामी न होने पावे । फिर अशोक से उनकी इज्जत बचाने के लिये उन्हें उनका हक देने के लिये कहते है तो अशोक उनसे कहता है । यह हक तो सभी मजदूरों के साथ का है । स्त्री की इज्जत बचा कर उसने कोई उपकार नहीं किया । वह तो प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है । कोई भी नारी जाति की रक्षा करना कर्तव्य है । क्योंकि अत्याचार तो पुरूष करते है । उनके मुकाबला करने के बजाय औरत से बदला लेना तो नाम-र्दानगी है । उसमें जुल्म का शिकार औरत क्यों बने ।

इस प्रकार यहां बताया है कि इज्जत सभी की समान होती है । चाहे वह निम्न वर्ग की हो या उच्च वर्ग की स्त्री समाज का ही एक अंग है । उसके रक्षा करना सबका कर्तव्य है । पुरूष को नीचा दिखाने के लिये उसकी स्त्री पर अत्याचार नहीं करने चाहिए ।

सवाल के सामने

यह कहानी भी जमींदारों द्वारा सताये गये शोषण की कहानी है। गरीब व्यक्ति को पैसे के बल पर दबाया-डराया व खरीदा जाता है।

इस कहानी में एक गरीब औरत अपने बारह वर्षीय पुत्र के साथ वकील के पास अपने अत्याचारों के विरूद्ध मुकदमा लड़ने के लिये कहने जाती है कि जमींदार ने सबके सामने उसके पति व बेटे का खून कर दिया लेकिन गांव वाले डर के कारण गवाही देने को तैयार ही नहीं है। जमींदार ने किसी दूसरे मजदूर का खून कर दिया था तथा उसको झूठी गवाही देने पर मजबूर किया। जब उसने गवाही देने से आना-कानी किया तो उसे व उसके बेटे का कत्ल कर दिया। पुलिस भी बिना पैसा लिये रिपोर्ट नहीं लिखती है।

वहीं औरत पहले तो हिम्मत करके वकील के पास मुकदमा लड़ने के लिये कहती है। लेकिन फिर मुकदमा वापिस लेने को कहती है क्योंकि जमींदार उसके घर कुछ अनाज भी दे गया था। तथा उसे धमकी भी दी थी, यदि उसने उसके खिलाफ मुकदमा किया। तो उसके दूसरे बेटे का भी कत्ल हो जायेगा। अतः वह बेटे के खोने के डर से केस नहीं करना चाहती है। वह जानती है कि कानून भी उसके दूसरे बेटे की रक्षा का जिम्मा नहीं लेगा। वह यही सवाल वकील साहब के यहां करके चली जाती है।

यहां पर यही बताया गया है कि पैसे के बल पर कानून भी खरीदा जाता है। पैसे में बड़ी ताकत है। पैसे वाले जुर्म करके भी बड़ी शान-मान के साथ चलते है। उनको कोई कुछ भी नहीं कहता है। गरीब व्यक्ति बेकसूर होने पर भी अत्याचारों को सहन करने पर मजबूर हो जाता है। वे सच्ची बात बताकर भी न्याय नहीं पा सकते है। बल्कि न्याय के लिये वे अपने आप को भाग्य के आधार पर छोड़ देते है।

बसंत का एक दिन संग्रह

"बसंत का एक दिन" संग्रह का प्रकाशन प्रभात प्रकाशन, दिल्ली से 1982 में हुआ था। इस संग्रह में एक अधूरी कहानी, पराया शहर, निर्णय, आखिरी चिट्ठी, बसंत का एक दिन, अकेला मकान आदि कहानियाँ है। जो इस प्रकार से है।

बसंत का एक दिन

पैसा ऐसी चीज है जो इंसान को जानवर बना देता है । व्यक्ति केवल अपने स्वार्थों को ही देखता है । उनकी नजरों में रिश्ते-नाते फिर कुछ नहीं होता है ।

ऐसे ही "बसंत का एक दिन" में जयराम के मां-बाप बचपन में मर जाते है । लेकिन उसकी परवरिश के लिये वे आठ बीघे खेत उसके चाचा के पास छोड़ जाते है जिससे वह कुछ पढ़-लिख सके । लेकिन उसके चाचा उसको पढ़ाने-लिखाने की बजाय नौकर की तरह झुकाकर सारा दिन काम करवाते थे । ठीक से न करने पर उसको मार पड़ती थी । वह हर समय उससे घृणा व नफरत दिखाते थे । उसके खेत वगैरह सभी अपने नाम करवा दिये थे । तथा बड़ा होने पर उसकी शादी भी नहीं करवाते जिससे उनके खेत न छीन जाये । उसे गांव वालो के सामने आवारा, पगला करार देते है । परिवार की उपेक्षा, गांववालों की उपेक्षा पाकर वह अकेला सा हो गया था ।

तभी उसे मल्लाह की एक विधवा लड़की फुलवा से प्रेम हो गया । वह उसे पाकर यह गांव छोड़ने को तैयार था । लेकिन उसका बहनोई तो स्वंय उस पर बुरी नजर रखता था तो उसे कैसे मिलने देता । दोनों को मार कर अलग कर दिया जाता है । गांव वाले स्वंय चाहे जो भी छिप-छिप कर बुरे कार्य करते थे । लेकिन उन्हें कोई कुछ भी नहीं कह सकता था । पैसा सब बुराइयों को ढँक देता है।

जयराम से फुलवा को अलग करके उसकी दूसरी जगह शादी कर देते है । उसके एक साल बाद फुलवा मर जाती है । यह सुनकर जयराम बिल्कुल सुन्न हो जाता है। उसका सब कुछ खत्म होने के बाद जीने का कोई मतलब नहीं रह गया था । लेकिन फिर भी गांव में एक बार आग लगने पर वह उस आग में कूद कर एक बच्चे को बचाकर अपनी आहुति दे देता है । तब भी गांव वालों की आंखों में आंसू नहीं निकलते है । जैसे-एक निकम्मे व्यक्ति से धरती का बोझ हल्का हो गया ।

इस प्रकार सब तरह से तिरस्कार पाने के बाद व्यक्ति का स्वभाव कठोर हो जाता है । लोग अपने स्वार्थों के लिये व्यक्ति को क्या से क्या बना देते है ।

उनका जीवन ही बर्बाद कर देते है । यदि ऐसे व्यक्ति को कहीं से कोई सहानुभुति देता भी है तो वह भी बर्दाश्त नहीं कर सकते कि कहीं वह अपना हक वापिस न ले लें । यहीं यहां बताया गया है ।

अकेला मकान

इस कहानी में लेखक ने पुरुष द्वारा ठुकराये जाने पर स्त्री को अपने पति का नाम-ले-लेकर स्वालम्बी जीवन जीते हुए बताया गया है । "अकेले मकान" की जगरानी बुआ की शादी होने के एक साल बाद ही उसके साथ अच्छा बर्ताव नहीं किया जाता था । फिर कुछ सालों के बाद बच्चा न होने के कारण उसका पति दूसरी शादी कर लेता है । उसके दूसरी शादी करने पर जगरानी बुआ अपना पति का घर छोड़कर मायके में आ जाती है । इधर ही अपने को खेतों के कार्यों में उलझा कर जीवन निर्वाह करती है । वह गांव के सुख-दुख तीज-त्योहार पर हाथ बंटाती थी । तथा अपना गम भुलाकर सबकी हंसी-खुशी में हिस्सा लेती थी । इस प्रकार छोटे-मोटे समाजिक कार्यों में लग कर वह स्वाभिमान से जीना पसंद करती थी ।

जबकि उसके पति द्वारा छोड़ने पर उसका पति कभी उसकी कुशल क्षेम पूछने भी उसके पास नहीं आता । लेकिन वह उसको आर्थिक तंगी होने पर अपने गहने देकर उसकी मदद करती है । जबकि उसको स्वंय संतान नहीं हो रही थी । लेकिन फिर भी तांत्रिको से भभूति लाकर उसके संतान प्राप्ति की प्रार्थना करती है । तथा पुत्र-प्राप्ति होने पर वह स्वंय भी खुशियां मनाती है । इस तरह लोगों के कार्य सम्पन्न होने पर सबको उस पर विश्वास हो गया था ।

लेकिन यह समाज इतना स्वार्थी है कि अपने कुकर्म छिपाने के लिये लोग दूसरों पर लांछन लगाकर उसको बदनाम जल्दी करते है । पुरुष की अपेक्षा औरत की बदमानी जंगल में आग की तरह जल्दी ही फैलती है ।

ऐसे ही एक दिन जगमोहन अपनी बहू के साथ जबरदस्ती कर रहा था । तो जगरानी बुआ के देखने पर उसको डोनहिन बताकर उसकी बदमानी करते है । गांव के लोग भी दूसरे की बात पर विश्वास करके उनके द्वारा किये गये परोपकार के कार्यों को भुलकर उसे भला बुरा कहते है । उसका पति जो वैसे कभी उसके पास जीने-मरने की खबर भी लेने नहीं आता था । अब उसकी बदनामी की बात सुनकर जल्दी आता है । ऐसे ही जगरानी बुआ को स्वाभिमान के विश्वास को ठेस लगती है । तो वह फिर से नहीं उभर पाती है। वह सुखो सुखो एक दिन संसार ही छोड़ देती है ।

इस प्रकार यहां बताया गया है कि अकेली नारी भी अकेले मकान में रहकर अपने स्वाभिमान से संघर्ष मय जीवन को बिता सकती है । लेकिन पुरूष समाज हमेशा से अपने कुकार्य को छिपाने के लिये नारी पर संदेह करता रहा है । लेकिन जगरानी बुआ अपने चरित्र का दाग नहीं लगने देती है । स्वाभिमान से ही मरती है ।

मेरी प्रिय कहानियां संग्रह

"मेरी प्रिय कहानियां" संग्रह का प्रकाशन साहित्य सहकार, दिल्ली में 1990 में हुआ है। इसमें संकलित सड़क, मां, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो, सीमा, मिसफिट, मुर्दा-मैदान, एक औरत एक जिंदगी, खाली घर, एक इन्टरव्यू उर्फ तीन शुतुरमुर्गों की, निर्णयों के बीच एक निर्णय, सर्पदंश, अतीत का चित्र, लड़की, कुत्ते, एक भटकी हुई मुलाकात, मुक्ति, पशुओं के बीच, घर, पड़ोसिन, जमीन आदि कहानियां है। इसमें लिखी गयी कई कहानियां अन्य कहानी संग्रह में भी संकलित की गयी है।

लड़की

"लड़की" कहानी में लड़का व लड़की में होने वाले भेदभाव को बताया गया है। सावित्री अपनी मां द्वारा भेदभाव करने पर भी सब कुछ सहन करती है। क्योंकि वह समझती है कि वह एक लड़की है। उसको पढ़ने का शौक है लेकिन उसे ज्यादा पढ़ने की अनुमति नहीं मिलती है। उसका छोटाभाई वह जो कुछ मांगता है उसे बिना आना कानी के मिल जाता है। चाहे वह कुछ पढ़े या न पढ़े। क्योंकि वह लड़का जो है।

सावित्री दिन भर मां के कहने पर घर का सारा कार्य करती है। तथा भूख लगने पर भी उसे सबके अंत में बचा हुआ खाना दिया जाता है। बल्कि उससे भी निम्न वर्ग के घटिया चावल व दाल दिया जाता है। तथा उसके भाई को भूख लगने पर सब काम छोड़ कर भी उसे पहले खाना दिया जाता है। भाई के पेट में दर्द होने पर उसको आधा खाना छोड़कर भी वैध के पास दवाई लेने भेजा जाता है। वैध न मिलने पर उसको "कुलच्छिनी" जैसे ताने भी सुनने पड़ते है। फिर भी सब कुछ सहन करती है। उसके साथ इस प्रकार का बर्ताव होता है जैसे वह उस घर की लड़की न होकर कोई नौकरानी हो। स्वंय मां भी (जो स्वंय एक लड़की थी, स्त्री है।) भेदभाव करती है।

लड़का चाहे आवारागर्दी ही क्यों न करे, लेकिन वह कुल का चिराग है। इस लिये उसे कुछ नहीं कहा जाता है। जबकि लड़की दिन-रात मां बाप की तो सेवा करती ही है। शादी के बाद भी उसे सुसराल में यही ताने-बाने सुनने पड़ते है। लड़की का जन्म ही पूरी उम्र इसी तरह दुख सह कर करता है। लड़के को लोग बुढ़ापा का सहारा मानते है। परन्तु बड़ा होकर चाहे वह उन्हें ही घर से निकाल दें। ये ही लड़के बड़े होकर सेवा-भाव करने से हिचकिचाते है। अतः लड़के व लड़की में भेदभाव नहीं बरतना चाहिये। दोनों के साथ समान व्यवहार करना चाहिये। यही इस कहानी के द्वारा लेखक बताते है।

"अपने लिये" कहानी संग्रह

"अपने लिये" संग्रह का प्रकाशन परमेश्वरी प्रकाशन, बी-109, प्रीत विहार, दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। उसका प्रथम संस्करण 1992 में प्रकाशित हुआ है।

"अपने लिये" कहानी संग्रह में रामदरश मिश्र ने ऐसी कहानियाँ ली है जो हमारे अनुभव और बोध के अधिक समीप होती है। और उन समस्याओं को प्रस्तुत किया है जो अचानक हमें उत्तेजित और आन्दोलित करने लगते है। एक नई सार्थकता ग्रहण करने लगती है। इन कहानियों में डर, रोटी, अकेली वह, अपने, लिये, खोया हुआ दिन, वह औरत, उलझन, एक मामूली आदमी, कर्फ्यू, मकान, भविष्य, कुत्ते, नौकरी, शेष यात्रा, हंसी, सोनू कब आयेगा पापा ? आदि कहानियां संकलित है। जो इस प्रकार से है।

डर

दहेज न मिलने की वजह से बहू पर अत्याचार होना आम बात हो गयी है। सच तो यह है कि स्त्री स्त्री को ही सहन नहीं करती है। जबकि सास व नन्द दोनों ही स्त्री है लेकिन वे ही बहू पर सबसे ज्यादा अत्याचार करती हैं। बहू बेचारी गरीब मां-बाप की बेटी होने के कारण सहन करने के अलावा कर ही क्या सकती है। ऐसी ही अत्याचारों के दर्द से भरी "डर" कहानी में नारी पर होंने वाले अत्याचारों को बताया गया है।

किसलय साहब की एक बेटी व बेटा है। बेटी रंजना पतित्याक्ता है। इसलिये वह नौकरी करके स्वंय पर आश्रित है। बेटा भोदूं मां का आंचल पकड़ कर चलने वाला। मां-बाप को अपने इस लाड़ले बेटे की शादी की चिंता थी। लड़का देखने में ठीक-ठाक था तथा कुछ न कुछ अर्जित करता था। इसके लिये किसलय कुछ रकम पाने के चक्कर में थे। जब कोई घर नहीं मिला तो हार कर गरीब लड़की से शादी करनी पड़ी। जिसका बाप रिटायर चपरासी था तथा उसकी पांच लड़कियां थी।

अभी लड़की की शादी हुए दस दिन भी नहीं हुए थे उसको मारा-पीटा व धमकाया जाता और पति से भी उसको अलग रखा जाता। उसे यह कह कर भी पीटा व ताड़ा जाता है कि तेरा पति जितना कमाता है। उसी अनुसार तुझे रोटी व कपड़ा मिला करेगा। वह बेचारी भूखी चुप-चाप सहन करने के अलावा क्या कर सकती। सारा दिन उस पर कड़ी निगरानी रखी जाती।

एक दिन वह अकेले मौका पाकर पड़ौस के अपर वाले मकान में गयी तथा उनको अपना दुख-दर्द का हाल बताया। उनका लड़का उसके लिये छिप-छिपा कर खाने की चीजें उसे चुपके से दे जाता था। एक दिन तो उसकी नन्द ने उसे खाने की चीज देते देख ली तो उनकी उस दिन बहुत ही दुर्दशा की गयी।

एक दिन तो बहू के जलने की चीख पुकार की आवाज सुनायी पड़ी। शोर सुनकर सभी लोग आये और उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां पर होश आने से

पहले ही उसने तोड़ किया । पुलिस के बयान में यह लिखाया गया की खाना बनाते समय स्टोव से जल गयी, इस प्रकार वे राक्षस लोग पुलिस के चुंगल से भी बच निकलते है ।

इस प्रकार गरीब बेटी की बलि चढ़ायी जाती है । बड़े शहरों में तो यह आम बात हो गयी । सास व नन्द को तो कभी आग नहीं लगेगी । बहू ही जली जाती है । वे जालिम जुल्म करने के बाद भी बच जाते है ।

रोटी

गरीबी समाज के लिये कितना बड़ा अभिशाप है । गरीब व्यक्ति के लिये रोटी जुटाना ही बहुत मुश्किल होता है । निम्न वर्ग का व्यक्ति तो शारीरिक श्रम करके जैसे-तैसे पेट निकाल लेता है । लेकिन पढ़ा-लिखा व्यक्ति न तो नौकरी ही पा सकता है न ही वह मजदूरी ही कर सकता है । उसके लिये विद्या को प्राप्त करना बेकार ही लगता है ।

आखिर सब तरफ से हताश होकर वह फैक्ट्री में किसी मजदूर की जगह पर कुछ दिन काम करता है । लेकिन उतनी मजदूरी के भी आधे पैसे मिलते है । अपढ़ मजदूर तो लड़-झगड़ कर अपना हक वसूल कर ही लेता । लेकिन वह उसको विरोध करना है तो मालिक उसे कहता है कि उसे शारीरिक कार्य करने का अभ्यास नहीं है । जब अभ्यास हो जायेगा तो पूरा श्रम मिलेगा ।

तभी उसने रास्ते में देखा, एक बूढ़ा व्यक्ति धून में से कंकड़ पत्थर छाँटकर धून को खा रहा था। जब उसने पूछा तो वह बोला उसने चार दिनों से कुछ नहीं खाया है । तभी उसने उसे ले जाकर ढाबेमें रोटी खिलायी तो बूढ़ा आशीर्वाद देता हुआ चला गया । गरीबी कितनी बुरी चीज है । पेट की खातिर ताकतवर कमजोर पर वार करते है ।- तथा उसका शोषण करते है । हर एक व्यक्ति अपना स्वार्थ को ही देखता है । उसका पेट भरना चाहिये चाहे दूसरे को मिले या न मिले ।

व्यक्ति तो व्यक्ति बल्कि जानवरों में भी यही भावना झलकती नज़र आती है । बलवान कुत्ता गरीब जर्जर कुते की रोटी छीन कर खा लेता है । वह बेचारा मार खा कर चला जाता है ।

इस प्रकार मिश्र जी बहुत ही मर्मनाक परिस्थितियों को प्रस्तुत किया है । जिसको पढ़ने से दिल दहल जाता है । पता नहीं कब, इस समस्या का हल सम्भव होगा या नहीं । यही प्रश्न मन में कौंध जाता है ।

अकेली वह
=======

एक औरत को कितने ही रिश्ते एक साथ निभाने होते हैं। जैसे पिता के साथ, पति के साथ और अंत में संतान के साथ. लेकिन इन सबके साथ निभाने पर भी कोई भी उसे अपना नहीं समझता है। सब उसे धीरे-धीरे ठुकराते हुए निकल जाते है। वह सब को अपना कहती हुई अकेली ही रह जाती है। सबके होते हुए भी वह अकेली रहती है। ऐसी ही एक औरत की कहानी को रामदरश मिश्र जी प्रस्तुतकरते है।

जब हिन्दुस्तान का बंटवारा हुआ था तब घर छोड़ते समय उसके भाई, माँ को रास्ते में मार डाला गया। पिताजी कहीं छिपते-छिपाते हुए रिफ्यूजी कैंम्प में ले आये। दो दिन बाद पिताजी उसे वहीं अकेला छोड़ पता नहीं कहां चले गये। कैंम्प के मैनेजर को अकेली लड़की पर दया आ गयी और वह उसे घर ले आकर अपने बच्चों के समान ही उसका पालन-पोषण किया। बी0 ए0 तक पढ़ाने के बाद उन्हों ने एक सुन्दर लड़का देखकर उसकी शादी भी करवा दी। तीन साल बाद उसने एक लड़की को जन्म दिया। तथा इसके साथ उसके पति ने एयर फोर्स की सर्विस भी छोड़कर इंडियन एयर लाइन्स में ज्वाइन कर ली। वहां पर विमान परिचारिका से उसे प्रेम हो गया।

एक दिन पति ने उससे तलाक लेने व दूसरी शादी करने का फैसला किया। अतः उसे अपने धर्म पिता मैनेजर के पास जाना पड़ा। वहां पर उन्होने उसे कोई नौकरी भी दिला दी। तथा उसे किराये का मकान भी दिलवा दिया। अब उसने अपने सभी सुखों का केन्द्र अपनी बेटी सुभा को बना दिया। उसको अच्छी से अच्छी तालीम देना ही उसके जीवन का उद्देश्य बन गया। एक दिन गिरते पड़ते स्वंय टूटते हुए भी अपनी बेटी को एम0 बी0 बी0 एस0 की डिग्री दिलवायी।

इतना सब करने के बाद भी अंत में फिर उस पर वज्र पात तब हुआ जब उसकी बेटीने उसे आकर यह सुचना दी कि उसने डॉक्टर दोस्त से कोर्ट में शादी कर ली है और चार दिन बाद उसे अमेरिका जाना है।

यह सुनकर उसे बहुत दुख हुआ जिसके लिये उसने अपने सभी सुखों की कुर्बानी दे दी। वह बेटी भी इतनी स्वार्थी निकली। ठीक है लड़की पराया धन होती

है । उसे तो एक न एक दिन छोड़कर जाना ही था । लेकिन वह इस तरह जायेगी उसका इसको अनुमान नहीं था । वह तो खुद उसकी शादी धूमधाम से करती तथा खुशी से उसको विदाई करती है। यदि उसे अपनी पसन्द के लड़के से शादी करनी थी । तब भी उसे पहले अपनी माँ को सुचना तो देनी चाहिये थी । तो क्या वह उसकी खुशी में दीवार थोड़ी ही न बनती । वह भी इस तरह एकाएक और इतनी दूर जा रही थी । जहां से वापिस आकर शायद पहचानना भीमुश्किल हो ।

लेकिन वह क्या कर सकती थी आखिर झेलने के सिवा उसके पास दूसरा कोई रास्ता भी नहीं था । सारी उम्र उसे सब बारी - बारी छोड़ते गये । अंत में उसे नितान्त अकेला ही रहना पड़ता है ।

इस प्रकार यह औरत की भावनाओं भरी कहानी है । जो उसे अकेला झेलने पर मजबुर करती है ।

अपने लिये

स्त्री हमेशा दूसरो की सुख सेवा करने व दुख दूर करने की ही सोचती है । वह कभी अपने लिये तो कुछ सोचती ही नहीं है । चाहे उसे कितने भी दुख झेलने पड़े फिर भी वह इसमें अपना सुख समझ कर सह लेती है । ऐसी ही "अपने लिये" कहानी में स्त्री के दुखों भरी दासता का वर्णन मिलता है ।

दो छोटी बहने थी । बचपन में ही मां चल बसी तो पिताजी ने दूसरी शादी कर ली । घर में यद्यपि खाने-पीने का बहुत अभाव था । तथापि पिताजी दूसरी शादी कर आये । नयी मां का लड़कियों को प्रति व्यवहार बहुत क्रूर था । नयी मां दोनों लड़कियों को देखकर जलती व कुढ़ती रहती थी तथा लगा-बुझा कर झूठ-सच पिताजी को बता कर उनसे पिटवाती थी।

फिर जब नयी मां को लड़का पैदा होता है । तो वह छुप-छिपा कर अपने लड़के को चीजें खिलाती तथा छोटी बहन के मांगने पर मनहूस कह कर मारती थी । इसी प्रकार दुख झेलते - झेलते लड़कियां बड़ी हो जाती है । पिताजी बड़ी लड़की की शादी तय कर देता है । वह सोचती है गरीब लड़की की तो वैसे भी बिना दहेज के शादी मुश्किल से होती है । यहां पर बिना दहेज के शादी हो रही थी । लड़कें के मां-बाप समाज-सेवक व अच्छे इंसान थे । उनका एक ही इकलोता पुत्र था । फिर वह अपनी छोटी बहन को भगवान के आसरे छोड़कर यह शादी कबूल कर लेती है । चलो इस नरक से तो छुटकारा मिलेगा ।

अभी ससुराल में आये दो-दिन ही हुए थे उसको यहां आने पर असलियत का मालुम चला कि उसके ससुरालवालों ने बिना दहेज के गरीब लड़की से शादी क्यों की थी । दरअसल उनके लड़के को पागलपन का दौरा पड़ता था । उस बात को उन्होंने छिपाया था । जब लड़की को मालूम चलता है तो वह बोलती है । बेटे का पागलपन छिपा कर एक गरीब लड़की की बलि दे रहे है । सोचते थे कि शादी के बाद क्या पागलपन ठीक हो जायेगा । वरन नहीं, पागल को कोई अपनी लड़की नहीं देगा । यह सोच कर आप लोगों ने गरीबी का मजाक बनाकर बिना दहेज

के शादी करवायी और समाज को यह दिखाया कि गरीब लड़की का उद्धार नहीं कर रहे है । बल्कि अपने पागल बेटे की शादी रचा रहे है । जो अपनी जिन्दगी तो संभाल नहीं सकता वो दूसरे की जिन्दगी को देसे खींच सकेगा । परन्तु गरीबी बुरी बला है । गरीब लड़की को दोनों ही तरफ से मार झेलनी पड़ती है । अब वह क्या कर सकती थी । जो भलमानस दिखने वाले सास-ससुर थे तो पति पागल के साथ निभाव कैसे करें । पिता के घर जा नहीं सकती । मौत के सिवा दूसरा कोई रास्ता उसे दिखायी नहीं पड़ता ।

--- लेकिन जब रात को उसका पति घर आता है तो उसके माथे पर से खून को देखकर उसका मन द्रवित हो उठता है । फिर वह सोचती है । इसमें इसके पति का क्या दोष । वह भी तो उसी की तरह निर्दोष है । यदि वह भी उसे छोड़ जायेगी तो उसे तो मौत के सिवा कुछ नहीं मिलेगा । और उसका पति भी अकेला जिंदगी भर भटकता रहेगा । अतः उसे अपने लिये न सहीं, पति लिये तो जीना होगा । उसको सहारा देना होगा, तभी उसका जीवन सार्थक होगा ।

इस प्रकार नारी का मन कितना विशाल होता है । वह अपनी कुर्बानी देकर भी दूसरे को सुखी देखना चाहती है । उनके दुख को अपना समझती है । यहीं बताया गया है ।

वह औरत

इस कहानी में भी मिश्र जी ने नारी पर होने वाले अत्याचारों का वर्णन किया है। समाज उसको सही रूप से जीने का हक नहीं देता है। जिसको वह अपना आलम्बन मानती है वहीं पुरूष उसको ठुकरा देता है। ठुकराने के बाद वह दूसरे पर आश्रित न होकर स्वालम्बी जीवन जीना पसन्द करती है। ऐसी ही कहानी "वह औरत" में मिलती है।

एक औरत जो पति के होते हुए भी विधवा का जीवन व्यतीत करती है। अपने बच्चों के साथ एक प्लॉट लेकर कच्चा-पक्का मकान बनवाकर रहती है। उसका पति उसको छोड़कर दूसरी औरत के साथ रहता है। उसको बच्चों समेत घर से निकाल देता है। उसका भाई उसको सहारा देता है लेकिन स्वयं पर आश्रित होना पसंद करती है। वह दूसरों के घर मेहनत-मजदूरी करके अपने बच्चों को पालती-पोसती है। अपनी बेटी की शादी के लिये अच्छा वर ढूंढती है तथा उसको टी0वी0 सोफा-सेट, बर्तन व नकद आदि दहेज देती है। उसके साथ अपने मकान का आधा हिस्सा भी उसके नाम करने की सोचती है जिससे उसको भविष्य में कोई तकलीफ न हो। लेकिन लड़की के लिये कोई कितना भी अच्छा क्यों न करता है। उसकी किस्मत ही ऐसी होती है।

उसे भी कुछ दिनों के बाद अपनी बेटी के जलने की खबर सुनायी पड़ती है। तो उसे बहुत दुख होता है। जिसके लिये वह इतने कष्ट करके संचित किया उसको ही कुछ सुख नहीं मिल सका। उसका भाई इसके मरने का बदला लेना चाहता है लेकिन वह मना कर देती है। बेटी तो अब चली गयी अब वह भी बदला लेकर फांसी पर चढ़ जायेगा तो उसका फिर कोई सहारा नहीं रह जायेगा।

इस प्रकार लड़कियों के लिये समाज में रहना कितना दुर्भर हो गया। सब तरफ से ठुकराई अलग जाती है, ताड़ित अलग सहन करनी पड़ती है। पुरूष वर्ग समाज सब कुछ देखकर भी चुप रहता है। आखिर नारी पर इतने अत्याचार क्यों ढाये जाते है। क्या इस समस्या का कोई समाधान नहीं होगा। यह प्रश्न हमारे मन में गूंजता ही रह जाता है।

मकान
====

जिस प्रकार हमारे समाज में रोटी, कपड़ा की समस्या बनी हुई है उसी प्रकार मकान की समस्या भी बहुत जटिल रूप से व्याप्त है । इतनी मंहगाई के जमाने में आदमी को दो जून का भोजन जुटा पाना ही कितना मुश्किल लगता है । तो वे मकान कहां से बनवा सकेगें । अत: मजबुरन उन्हें किराये के मकान में रहना पड़ता है । तथा आये दिन मकान मालिक की गालियां या उनका दुर्व्यवहार की जिल्लत को भी सहन करना पड़ता है । मकान मालिक के उसी रूप का वर्णन "मकान" कहानी में किया गया है ।

जब तक व्यक्ति के पास अपना मकान नहीं होता है । तब तक तो वह मकान-मालिक के सब रूप को चुप कर सहन करते है । लेकिन जैसे ही वह स्वंय का मकान बना लेते है तथा उसका कुछ हिस्सा किराये पर दे देते है तो उनका व्यवहार भी मालिक बनने के हिसाब से बदल जाता है । कहीं तो किरायेदार भी ऐसे होते है । जो 15-20 साल एक मकान में रहने के बाद जगह खाली करने के लिये मुंहमागी रकम मांगते है । नहीं देने पर स्वंय का दावा करते है । कहीं किरायेदार तो इतने शरीफ होते है सोचते है एक तो हम उनके मकान में इतने साल रहे । फिर उनसे पैसे भी वसूल करें, यह ठीक नहीं है । वे सोचते है, मकान-मालिक ने हैरान किया वह अलग बात है । लेकिन उससे मुक्त के पैसे बसुलना ठीक है ।

शुरू-शुरू में तो मकान मालिक अच्छा व्यवहार करता है । लेकिन धीरे-धीरे उसमें क्रूरता व दंभ के रंग नजर आते है । वे बिना बात के किरायेदार से आकते है। कभी तो दोपहर के समय सोने के समय मसाला कूटने की आवाज धम्म-धम्म करके नींद खराब करते है । कभी बच्चों की बात पर, छत पर नहीं जाना । ऐसे नहीं करना वैसे नहीं करना, के सिंद्धात लगाते है । बिना बात के बात को खोपते है । ठीक है यदि वह मकान रहने के लिये देते है तो उसका किराया भी वसूलते है । तो फिर टोका-टाकी क्यों ?

इस प्रकार अनेक छोटे-मोटे किस्सों को बताया गया है । जो मकान-मालिक के संदर्भ में बताये गये है । परन्तु गरीबी की वजह से मकान के अभाव में तो सहन करनी ही पड़ती है ।

नौकरी

आज के इस युग में नौकरी मिलना बहुत ही मुश्किल बात है । आज कितने ही पढ़े-लिखे युवक नौकरी के लिये भटकते है । परन्तु नौकरी नहीं मिलती है । अशिक्षित व्यक्ति तो कोई भी काम-धंधा करके रोजगार चला सकता है । लेकिन पढ़ा-लिखा व्यक्ति न तो मेहनत-मजदूरी कर सकता है, नही उसे रोजगार ही मिलता है । रोज कल की आशा में जूते घिसाता रहता है । ऐसे ही पढ़े-लिखे बेरोजगार व्यक्ति की व्यथकथा को मिश्र जी ने इस "नौकरी" कहानी में बताया है ।

महेश गरीब घर का लड़का होने के बावजूद हर साल प्रथम श्रेणी में पास होता था । वह पांच वर्षों में तीन इंटरव्यू दे चुका था । लेकिन हर बार उसे यही आश्वासन मिलता, कोई बात नहीं, अगली बार कोशिश कीजियेगा । जबकि उससे कम योग्यता वाले बी० ए० सेकेंड या थर्ड और एम० ए० सेकेंड तथा शोधकार्य भी कोई खास प्रशंसा वाला नहीं, नौकरी मिल जाती है । वह हर बार असफल होने पर निराश हो जाता है । वह सोचता है उसके पास तो केवल उत्तम डिग्रियों है और वह दूसरी योग्यता नहीं है जिससे वह विभागाध्यक्ष को प्रबन्ध समिति को अध्यक्ष को, प्राचार्य को या इंचार्ज को खुश कर सकें । वे तो केवल उसकी डिग्रियों के आधार पर उसे आश्वासन ही देते है

महेश के पिता सरकारी दफ्तर में बाबू थे । उसकी मां के मरने के बाद पिताजी ने घर संभाला था । तनख्वाह में से थोड़ा बहुत बचाकर बच्चों को पढ़ाते-लिखाते थे । छोटा भाई को पढ़ने का शौक नहीं था । बहन भी पढ़ने में ठीक-ठीक थी । लेकिन महेश पढ़ने में बहुत ही होशियार था । पिताजी को उस पर बहुत उम्मीद थी । यह पढ़ लिख जायेगा तो उसे अच्छी नौकरी मिल जायेगी । आखिर एक दिन महेश एम० ए० प्रथम श्रेणी में पास होता है । तभी उनके पिताजी के गिर जाने से उनको लकवा हो जाता है । अब सारी जिम्मेदारी महेश के सर पर आ जाती है । लेकिन उसे कहीं नौकरी नहीं मिलती है । तभी उसका छोटा भाई दसवीं फेल पढ़ाई-लिखाई छोड़ कर लिफाफें बनाने का काम शुरू कर देता है । जिससे घर का खर्चा चल सकें । वह सोचता था कि भइया ने इतना पढ़ने के बाद भी बेकार है। तो ऐसी पढ़ाई से फायदा क्या। इससे अच्छा तो कोई हाथ का काम करना चाहिए ।

महेश भी लेक्चररशिप की उम्मीद में एम0 फिल0 भी कर लेता है । लेकिन सब बेकार वह अपने-आप को धिक्कारता है कि छोटा भाई घर चलाता है । लेकिन वह घर के लिये कुछ नहीं कर सकता है । उसकी बहिन भी शादी के लायक हो गयी थी । वह हिम्मत हार कर आत्महत्या करने की सोचता है । लेकिन इससे तो उसको छुटकारा मिल जायेगा उसके परिवार का क्या होगा । लेकिन फिर भी हिम्मत करके दूसरे कालेजों के इंटरव्यू के लिये सोचता है ।

इस प्रकार इतनी गरीबी के बावजूद भी यदि कोई नौकरी की उम्मीद में पढ़-लिख लेता है तो भी उसे निराशा मिलती है । इसके चक्कर में वे कुछ काम-काज भी नहीं कर सकते है । आज देश में बेरोजगारी की समस्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है । न जाने इन नवयुवकों को कब आशा की किरण दिखायी देगी । यही बताया गया है ।

साथ रहे । लेकिन वह बोलता है कि वह उनके दायित्वों को पूरा करने के लिये तो जिन्दगी नहीं जियेंगें बल्कि उनको भी अपना विकास के लिये कुछ चाहिये । वह उनसे जाने की अनुमति लेने के लिये नहीं बल्कि उनको अपने जाने की सूचना देने आया है ।

इस प्रकार दोनों बेटे उनको छोड़ कर चले जाते है । दोनों ने वहीं पर शादी कर ली और बच्चे भी हुए । इसकी सूचना वे कभी-कभी पत्रों के माध्यम से दे देते थे । सुरेन्द्र व पार्वती दोनों ही अपने बच्चों से मिलने के लिये तड़पते थे । लेकिन रो-धोकर अपने आप ही एक दूसरे को संभाल लेते थे । ऐसे ही वर्षों बाद पार्वती सुरेन्द्र को नितांत अकेला छोड़कर चली जाती है ।

इस प्रकार भरा-पूरा परिवार होने के बावजूद भी सुरेन्द्र बिल्कुल अकेला रह जाता है । वह यहीं मान कर अपने को तसल्ली दे देता है कि उसके कोई औलाद ही नहीं थी ।

आजकल के जमाने में सभी अपने स्वार्थ को ही देखते है । वे अपने स्वार्थ के आगे अपने माँ-बाप के प्रति जिम्मेदारियों को भूल जाते है । वे ये भूल जाते है आज उनको इस स्थिति तक पहुंचाने में भी उनका ही हाथ है तो उनका भी फर्ज बनता है कि वे उनकी सेवा करें । पर ऐसा सम्भव नहीं होता है ।

सन्दर्भ सूची

1) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी - वस्तु विकास एवं शिल्प विधान पृ0-- 15

2) "प्रकर" माघ - डॉ0 चन्द्रकला त्रिपाठी पृ0 - 36

3) हिन्दी कहानी - दो-दशक पृ0 - 42

4) आधुनिकता के संदर्भ में हिन्दी कहानी पृ0 - 8

5) हिन्दी कहानी - एक अन्तरंग पहचान पृ0 - 27

6) समसामायिक हिन्दी कहानी पृ0 - 16

7) समसामायिक हिन्दी कहानी पृ0 - 19

8) नयी कहानी - सफलता और सार्थकता पृ0 - 62